वार्षिक प्रतिवेदन

2003-2004

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संस्थापित)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संस्थापित)

वार्षिक प्रतिवेदन

२००३-२००४

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
५६–५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली – ११००५८

प्रकाशक:

कुलपति,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
५६–५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली–११००५८

मुद्रक:
अमर प्रिंटिंग प्रैस
८/२५, विजय नगर, दिल्ली–११०००९

विषय–सूची

		पृष्ठ सं.
१.	प्रस्तावना	५–६
	१.१ भूमिका और कार्य	
	१.२ कार्यक्रम और क्रियाकलाप	
	१.३ अध्यापन	
	१.४ अध्यापक प्रशिक्षण	
	१.५ शोध	
	१.६ प्रकाशन	
	१.७ दूरदर्शन पर प्रसारण	
२.	वर्ष २००३–२००४ में उपलब्धियाँ	७
३.	संगठन और स्थापना	८
४.	शैक्षणिक अनुभाग	१२
५.	शोध एवं प्रकाशन अनुभाग	१३
६.	पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण	१८
७.	परीक्षा अनुभाग	२५
८.	प्रशासन अनुभाग	२७
९.	वित्त अनुभाग	२८
१०.	योजना अनुभाग	३०
१०.१	पुस्तकालय अनुभाग	३३
११.	परिसर	
	११.१ **उत्तर प्रदेश**	३४
	गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद	
	११.२ **उड़ीसा**	३७
	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	
	११.३ **जम्मू और कश्मीर**	४२
	श्री रणवीर परिसर, जम्मू	
	११.४ **केरल**	४६
	गुरुवायूर परिसर, त्रिचूर	
	११.५ **राजस्थान**	५०
	जयपुर परिसर	

		पृष्ठ सं.
११.६	**उत्तर प्रदेश**	
	लखनऊ परिसर	५४
११.७	**कर्नाटक**	
	राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी	५७
११.८	**हिमाचल प्रदेश**	
	गरली परिसर	६३
११.९	**मध्य प्रदेश**	
	भोपाल परिसर	६६
११.१०	**महाराष्ट्र**	
	मुम्बई परिसर	७०
१२. वर्ष की प्रमुख घटनाएँ		
१२.१	संस्कृत सप्ताहोत्सव	७१–७९
१२.२	वसन्तोत्सव (३–४ मार्च, २००४)	
१२.३	अखिल भारतीय वाक् स्पर्धा (२७–२९ दिसम्बर, २००३)	
१२.४	आदि शङ्कर व्याख्यानमाला–श्री आद्यशङ्कर आविर्भाव पञ्चविंशति शती महोत्सव (७.५.२००३) के समय आयोजित	
१२.५	प्रथम वी.सी.डी.–संस्कृत भाषा शिक्षणम् का विमोचन (२६.३.२००४)	
१२.६	संस्कृत नेट–भाषा मन्दाकिनी (५.९.२००३)	
१२.७	विश्व संस्कृत सम्मेलन (१४–१८ जुलाई, २००३)	
१२.८	दूरदर्शन पर संस्कृत कार्यक्रम	
१२.९	हिन्दी पखवाड़ा (१५.१.२००४)	
संलग्नक		
क.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की प्रबन्धन परिषद् के सदस्यों की सूची।	८०–१०४
ख.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की वित्त समिति के सदस्यों की सूची।	
ग.	सम्बद्ध संस्थाएँ।	
घ.	संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाली संघ एवं राज्य सरकारों के नामों की सूची।	
ङ.	संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाले विश्वविद्यालयों के नामों की सूची।	

१. प्रस्तावना

१.१ भूमिका और कार्य

सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम १८६० (१८६० का अधिनियम XXI) के अन्तर्गत पंजीकृत और अब मानित विश्वविद्यालय के रूप में कार्यरत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की स्थापना अखिल भारत में संस्कृत के विकास व संवर्धन हेतु अक्तूबर, १९७० में स्वायत्त संस्था के रूप में की गई। यह प्रारम्भ से ही भारत सरकार द्वारा पूर्णतया निधिबद्ध है। यह संस्कृत के प्रसार तथा विकास हेतु शीर्ष निकाय के रूप में कार्यरत है और संस्कृत अध्ययन के विकास हेतु विभिन्न कायक्रमों और योजनाओं के निर्माण तथा कार्यान्वयन में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को सहयोग देता है। इसने सभी दृष्टिकोणों से संस्कृत भाषा और शिक्षण के प्रसार व विकास हेतु भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा १९५६ में स्थापित संस्कृत आयोग द्वारा की गई विभिन्न संस्तुतियों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु केन्द्रीय निकाय के कर्त्तव्यों को ग्रहण कर लिया है।

संस्थान के पारम्परिक संस्कृत शिक्षण के संवर्धन और सम्प्रसारण के क्षेत्र में उत्कृष्ट महत्त्वपूर्ण कार्यों, अप्रकाशित संस्कृत मूल–पाठों के श्रेष्ठ प्रकाशनों, ५०,००० से भी अधिक दुर्लभ संस्कृत पाण्डुलिपियों के संरक्षण तथा प्रबन्धन को महत्त्व देते हुए भारत सरकार ने इसे ७ मई, २००२ से प्रभावी मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया है जो अधिसूचना सं.एफ. ९–२८/२००० यू ३ (सी.पी.पी.–१) दिनांकित १३ जून, २००२ द्वारा अनुगत है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अधिसूचना संख्या एफ ६–३१/२००१ (सी०सी०पी०१), दिनांक १३ जून २००२ से अनुगत किया गया है।

संस्था के बहिर्नियम में निर्दिष्टानुसार राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्य उद्देश्य संस्कृत अध्ययन, शोध, प्रसार, विकास व प्रोत्साहन हैं और संस्थापित अथवा अधिगृहीत समस्त परिसरों के प्रबन्धन हेतु केन्द्रीय प्रशासनिक और समन्वयक तन्त्र के रूप में कार्य करना है।

इस अवधि में प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

१.२ कार्यक्रम और क्रियाकलाप

संस्थान ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित कार्यक्रम और क्रियाकलाप प्रारम्भ किये हैं :–

- विभिन्न राज्यों में परिसरों की स्थापना।
- माध्यमिक, पूर्वस्नातक, स्नातक, स्नातकोत्तर स्तरों पर परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षण तथा डॉक्टर की उपाधि के स्तर पर शोध का संचालन करना।
- स्नातक अर्थात् शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण का संचालन करना।
- संस्कृत के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य का संचालन व समन्वयन।
- उभयनिष्ठ अभिरुचि वाली संयुक्त परियोजनाओं के प्रयोजन में अन्य संगठनों से सहयोग।
- संस्कृत पुस्तकालयों, पाण्डुलिपि संग्रहालयों की स्थापना और दुर्लभ पाण्डुलिपियों तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन तथा प्रकाशन।

१.३ अध्यापन

संस्थान द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के आधार पर प्राक्शास्त्री से लेकर आचार्य स्तरों तक संस्थान के अङ्गीभूत परिसरों में शिक्षण का प्रबन्ध किया जाता है।

संस्थान द्वारा संचालित और संस्थान से सम्बद्ध संस्कृत संस्थाएँ भी उसी पाठ्यक्रम के साथ शिक्षण प्रदान करती हैं। सभी परिसरों में संस्कृत शिक्षा की आधुनिक प्रणाली के छात्रों को परम्परागत प्रणाली में सम्मिलित होने की सुविधा देने हेतु प्राक्शास्त्री नामक +२ स्तर का द्विवर्षीय मध्यवर्ती पाठ्यक्रम है। सम्प्रति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान दस परिसरों का संचालन कर रहा है।

१.४ अध्यापक–प्रशिक्षण

परिसरों में शिक्षण अभ्यास पर बल देते हुए एक शिक्षा–वर्ष के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है जिसमें संस्कृत में बी.एड्. के समकक्ष शिक्षा–शास्त्री की उपाधि प्रदान की जाती है।

१.५ शोध

गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद का एकमात्र उद्देश्य चयनित शाखाओं में शोध सम्पादन है। सभी परिसरों में शोध हेतु छात्रों को स्वयं को पंजीयन कराने की सुविधाएँ विद्यमान हैं और इसके सफल समापन पर उन्हें पी–एच्.डी. के समकक्ष विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है।

१.६ प्रकाशन

शोध पत्रिकाएँ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान 'संस्कृत विमर्श:' और 'गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद शोध पत्रिका' नामक दो शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। जबकि पहली पत्रिका संस्थान के मुख्यालय द्वारा प्रकाशित होती है, दूसरी गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित की जाती है। इसके अतिरिक्त 'उशती' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन भी गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद द्वारा किया जाता है।

१.७ दूरदर्शन प्रसारण

प्रसार भारती के माध्यम से संस्कृत अध्ययन कार्यक्रम आरम्भ किया गया था और यह कार्यक्रम ज्ञान दर्शन चैनल पर प्रतिदिन दिखाया जा रहा है। यह कार्यक्रम बहुसंख्यक लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और संस्थान को सम्मान मिल रहा है। वर्ष २००३–२००४ में इस कार्यक्रम हेतु ८६.६७ लाख रुपए की राशि का उपयोग किया गया।

२. वर्ष २००३—२००४ में उपलब्धियाँ

- ७ प्रकाशन प्रकाशित किए।
- १०,५८० छात्र संस्थान की परीक्षाओं में बैठे।
- ३०३३ छात्रों को संस्थान परिसरों में प्रवेश मिला।
- उच्चमाध्यमिकोत्तर योजना के अन्तर्गत २९३२ छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।
- १८ छात्रों को पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।
- संस्कृत ग्रन्थ क्रय योजना के अधीन २७२ ग्रन्थों का थोक में क्रय हुआ।
- संस्कृत साहित्य प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत प्रकाशकों/विद्वानों ने ३४ प्रकाशन प्रकाशित किए।
- स्वयंसेवी संस्कृत संस्थाओं को अनुदान योजना के अन्तर्गत ७९३ संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
- स्वयंसेवी संस्कृत संस्थाओं को अनुदान योजना के अन्तर्गत १२५० शिक्षकों को समेकित वेतन प्रदान किया गया।
- स्वयंसेवी संस्कृत संस्थाओं को अनुदान योजना के अधीन ६१९० छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।
- अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण कार्यक्रम में ५०,००० से अधिक छात्रों ने भाग लिया।
- अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा प्रतियोगिता में शास्त्र शलाका परीक्षा को एक विषय के रूप में आयोजन किया गया।

३. संगठन और स्थापना

भारत सरकार द्वारा नियुक्त कुलाध्यक्ष (President) संस्थान का प्रधान होता है। माननीय श्री अर्जुन सिंह जी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार संस्थान के कुलाध्यक्ष (President) हैं। कुलपति प्रधान तथा कार्यपालक अधिकारी हैं। वह संस्थान के मामलों पर सामान्य पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण रखता है, नीतियों और योजनाओं का निष्पादन करता है तथा इसके सभी प्राधिकारियों के निर्णयों को लागू करता है। प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री कुलपति के पद पर हैं। कुलाध्यक्ष के अतिरिक्त संस्थान के निम्नलिखित स्वीकृत प्राधिकारी हैं।

१. प्रबन्ध परिषद्– यह संस्थान में प्रबन्धन का प्रमुख अंग है। सुविचारित निर्णय लेने तथा उन्हें कार्यान्वियत करने तथा संकटपूर्ण स्थितियों को प्रभावशाली ढंग से निपटने के लिए अधिकार–सम्पन्न है।

२. विद्वत् परिषद्– शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षा और शोध कार्यक्रमों के मानदण्डों के अनुरक्षण हेतु प्रधान शैक्षिक निकाय है।

३. योजना एवं प्रबोधन परिषद्– विकास कार्यक्रमों के मानीटर हेतु उत्तरदायी प्रमुख योजना निकाय है।

४. वित्त समिति– प्रबन्धन परिषद् के समक्ष वार्षिक लेखा व वित्तीय प्राक्कलन रखने, कुल व्यय की सीमाएँ निर्धारित करने और हर प्रकार के पदों के सृजन की संस्तुति करने के लिए उत्तरदायी प्रमुख वित्त निकाय है।

५. परामर्शदात्री समिति– इसे शैक्षिक आयोजना व वृद्धि में सहायता का काम सौंपा गया है। यह यू.जी.सी. के नामिती की अध्यक्षता के अधीन कार्य करती है।

प्रबन्धन परिषद् तथा वित्त समिति का संघटन क्रमशः संलग्नक 'क' और 'ख' में दिया गया है।

अपने समृद्ध पुस्तकालय के अतिरिक्त राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान सात अनुभागों के द्वारा कार्य करता है :–

१. शैक्षणिक अनुभाग
२. शोध और प्रकाशन अनुभाग
३. पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग
४. परीक्षा अनुभाग
५. प्रशासन अनुभाग
६. वित्त अनुभाग
७. योजना अनुभाग

इनमें से प्रत्येक अनुभाग के प्रधान उप/सहायक निदेशक/उप नियन्त्रक हैं।

३.१ शैक्षणिक अनुभाग

यह एकक शैक्षिक कार्य–निष्पादन हेतु मानकों के निर्धारण के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों हेतु कैलेंडर निर्माण और विविध पाठ्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने के लिए प्रमुखतया उत्तरदायी है।

३.२ शोध एवं प्रकाशन अनुभाग

यह एकक अङ्गीभूत परिसरों की शोध और प्रकाशन गतिविधियों तथा संस्थान के शोध और प्रकाशन कार्यक्रमों और परियोजनाओं के समन्वय से सम्बद्ध है। यह संस्कृत साहित्य के निर्माण और पुस्तकों के थोक क्रय को वित्तीय सहायता प्रदान करने जैसी योजनाओं से भी सम्बद्ध है।

३.३ पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग

यह एकक पत्राचार पाठ्यक्रमों की व्यवस्था हेतु उत्तरदायी है। ये पाठ्यक्रम दो स्तरों पर प्रस्तुत किए जाते हैं और यह अनुभाग अखिल भारत में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का भी प्रबन्ध करता है तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण हेतु पाठ्यसामग्री का निर्माण करता है।

प्रस्तुत किए गए पत्राचार पाठ्यक्रम हैं :–

क. संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम
प्रथम वर्ष (हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम)

ख. संस्कृत का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम
द्वितीय वर्ष (हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम)

अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण पञ्चस्तरीय पाठ्य–सामग्री प्रस्तुत करता है जो स्वाध्याय से आरम्भ होती है। संस्कृत अध्ययन से प्रेम करने वाला समाज का कोई भी वर्ग इस कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकता है।

३.४ परीक्षा अनुभाग

परीक्षा अनुभाग निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए वार्षिक और पूरक परीक्षाओं का आयोजन करता है।

प्रथमा	(कक्षा VIII)
पूर्वमध्यमा	(कक्षा X)
उत्तरमध्यमा	(कक्षा XII)
प्राक्शास्त्री	(कक्षा XII)
शास्त्री	(बी.ए.)
शिक्षाशास्त्री	(बी.एड.)
आचार्य	(एम.ए.)

संस्थान द्वारा शिक्षा–शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु परीक्षा अनुभाग के माध्यम से पूर्व शिक्षा शास्त्री प्रवेश–परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। इसे पूर्व–शिक्षा शास्त्री परीक्षा (पी.एस.एस.टी.) के रूप में जाना जाता है।

यह परिसरों और सम्बद्ध संस्थाओं के छात्रों को शोध उपाधि विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) प्रदान करने हेतु शोध–प्रबन्ध के मूल्यांकन और मौखिक परीक्षा की व्यवस्था भी करता है।

३.५ प्रशासन अनुभाग

प्रशासन अनुभाग संस्थान और उसके अंगीभूत परिसरों के सामान्य प्रशासनिक कार्यों की देखभाल करता है। यह नियुक्तियों, पदस्थापनों, स्थानान्तरणों तथा अन्य स्थापना सम्बन्धी कार्यों की योजना भी बनाता है। परिसरों पर नियन्त्रण रखना भी इस अनुभाग का प्रमुख दायित्व है।

३.६ वित्त अनुभाग

इस अनुभाग के कार्य आय–व्यय का विवरण तैयार करना, अनुदान की प्राप्ति तथा उसका विरतण, वित्तीय व्यवस्था और वार्षिक लेखा–जोखा आदि तैयार करना है। यह भविष्य निधियों का भी प्रबन्धन करता है और छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों के संवितरण की व्यवस्था करता है।

३.७ योजना अनुभाग

यह अनुभाग स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, शास्त्र चूड़ामणि विद्वानों की नियुक्तियाँ करना, विभिन्न संस्कृत पाठशालाओं/विद्यालयों/स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों/विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना जैसी विभिन्न योजनाओं के उचित कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी है। यह अनुभाग संस्कृत के पारम्परिक छात्रों के लिए अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा के आयोजन हेतु भी उत्तरदायी है।

३.८ परिसर

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अंगीभूत परिसर निम्नलिखत हैं :–

क्रम सं.	परसरों के नाम	स्थान
१.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान श्री गङ्गानाथ झा परिसर	इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
२.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान श्री सदाशिव परिसर	पुरी, उड़ीसा
३.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान श्री रणवीर परिसर	जम्मू, जम्मू और कश्मीर
४.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गुरुवायूर परिसर	त्रिचूर, केरल
५.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान जयपुर परिसर	जयपुर, राजस्थान
६.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान लखनऊ परिसर	लखनऊ, उत्तरप्रदेश
७.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान श्री राजीव गांधि परिसर	शृंगेरी, कर्नाटक
८.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गरली परिसर	गरली, हिमाचलप्रदेश

९.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर	भोपाल, मध्यप्रदेश
१०.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के.जी. सोमया परिसर	मुम्बई, महाराष्ट्र

ये परिसर निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए अध्यापन कार्य करते हैं :–

क्रम सं.	पाठ्यक्रम	के समकक्ष
१.	उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री	सीनियर सेकेण्डरी
२.	शास्त्री	बी.ए.
३.	आचार्य	एम.ए.
४.	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
५.	विद्यावारिधि	पी–एच.डी.

बी.एड. कार्यक्रम का संचालन पुरी, जम्मू, जयपुर, लखनऊ, शृंगेरी, भोपाल और गुरुवायूर परिसरों में किया जाता है।

४. शैक्षणिक अनुभाग

इस विभाग की प्रधान डा. श्रीमती सविता पाठक, उप निदेशक (शैक्षणिक) हैं। इस अनुभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत हैं :–

१.	शोध सहायक	१
२.	वरिष्ठ आशुलिपिक	१
३.	निम्न श्रेणी लिपिक	१
४.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१

यह अनुभाग निम्नलिखित कार्यकलापों से सम्बन्धित है–

यह संस्थान के शैक्षिक क्रियाकलापों का प्रमुख व्यवस्थापक है और विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रमों का निर्माण करता है।

प्रथमा से आचार्य तक के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम बनाने के लिए अलग–अलग विषयों की समितियों का गठन किया गया है। इसे आवश्यकतानुसार संवीक्षा हेतु अध्ययन मण्डल के पास भेजा जाता है।

तथापि, जहाँ तक विद्यालय स्तर पर अंग्रेजी, हिन्दी और इतिहास जैसे आधुनिक विषयों का प्रश्न है, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम को अपनाया जाता है। शास्त्री कक्षा के लिए हिन्दी और अंग्रेजी जैसे आधुनिक विषयों के लिए सामान्यतया दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम को अपनाया जाता है।

५. शोध एवं प्रकाशन अनुभाग

इस अनुभाग के प्रधान सहायक निदेशक (शोध और प्रकाशन) डा. प्रकाश पाण्डेय (एम.ए. संस्कृत, आचार्य योगतन्त्र, पी. एच.डी.) हैं।

इस अनुभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत हैं :–

१.	अनुभाग अधिकारी	१
२.	शोध सहायक	१
३.	सहायक	१
४.	निम्न श्रेणी लिपिक	३
५.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१

इस शाखा का दायित्व मुख्यालय और परिसरों के शोध और प्रकाशन कार्यों में सामंजस्य स्थापित करना है।

इसके अतिरिक्त, मन्त्रालय से अन्तरित निम्नलिखित योजनाओं के कार्यान्वयन का कार्य भी इसके सुपुद्र किया गया है–

१. समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं के साथ–साथ संस्कृत वाङ्मय की रचना।

२. संस्कृत–ग्रन्थों का क्रय और अप्राप्य तथा दुर्लभ ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण।

३. पाण्डुलिपियों का क्रय और प्रकाशन।

वर्ष २००३–२००४ में संस्थान की अनुदान समिति की एक बैठक बुलाई गई जिसमें विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया। इन योजनाओं के अधीन रु. ७५.११ लाख व्यय हुए।

संस्कृत वाङ्मय रचना योजना के अन्तर्गत अनुदान समिति के द्वारा निम्नलिखित संस्कृत पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता का अनुमोदन किया गया:–

क्रम सं.	पत्रिका का नाम	से प्रकाशित	अवधि	अनुदान राशि
१.	चन्दामामा	चेन्नई	मासिक	रु. ८०,०००/– प्रतिवर्ष
२.	सम्भाषण सन्देश	बेंगलूर	मासिक	रु. ८०,०००/– प्रतिवर्ष

वर्ष के दौरान पूर्वोक्त दो पत्रिकाओं के अलावा १० अन्य संस्कृत पत्रिकाओं के लिए रु. १,४४,४१०/– का अनुदान जारी किया गया है।

इस वर्ष में संस्कृत वाङ्मय रचना योजना के अन्तर्गत भारत के विभिन्न भागों के विद्वानों को निम्नलिखित ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु अनुदान प्रदान किए गए थे।

क्रम सं.	ग्रन्थकार का नाम	ग्रन्थ का शीर्षक	प्रकाशन	रचना हेतु वर्ष में जारी किया गया अनुदान
१.	श्री आर. गोविन्दराजन, चेन्नई	पादुकासहस्रनाम	लेखक	९९,४९०/–
२.	डा. अभिराम सुन्दरम्, चेन्नई	ज्ञानेश्वर दीक्षित का अलंकारराघव ए स्टडी (अलंकार प्रकरण)	लेखक	१४,९३६/–
३.	डा. जयन्त श्याम ब्रह्मचारी इलाहाबाद	पुराणेषु व्याकरण विमर्श	प्रशान्त पब्लिकेशन, इलाहाबाद	३०,५८७/–
४.	पं. एकानन्द राजहंस देवघर (बिहार)	भारतीय संस्कृति की नवनीत कथा	लेखक	४४,१४५/–
५.	डा. कृष्ण कुमार हरिद्वार	प्राचीन भारतस्य भौगोलिकस्वरूपम्	मयंक प्रकाशन कंकहाल (हरिद्वार)	३६,२२२/–
६.	प्रो. जयमंत मिश्र दरभंगा	आर्य पञ्चसती	इन्दिरा प्रकाशन, दरभंगा	२३,४३५/–
७.	डा. मितली देव वाराणसी	यज्ञतन्त्र सुधानिधि	श्रीजी पब्लिकेशन, वाराणसी	३२,४९०/–
८.	डा. पी.आर. पञ्चमुखी धारवाड़ा	श्रीमद् विष्णुतत्त्व विनिर्णय	लेखक	९३,१०१/–
९.	डा. के. माधवन कोलकता	द भट्टी काव्य–ए क्रिटिकल अप्रैसेल	संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता	१३,५१८/–
१०.	डा. बृजेश कुमार शुक्ला लखनऊ	वेद व्यास प्राणीतम् आद्य पुराणम्	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	५५,४९३/–
११.	डा. ओमप्रकाश पाण्डेय लखनऊ	संस्कृत मनीषा के कतिपय नक्षत्र	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	४३,४१४/–
१२.	प्रो. बी. रामराजु हैदराबाद	वेंकट विजय वैजयन्ती	लेखक	२०,५९४/–
१३.	डा. आर.के. शर्मा दिल्ली	हनुमद् भक्ति परक साहित्य	शती प्रकाशन, दिल्ली	३९,३३२/–

१४.	डा. उर्मिला रस्तोगी दिल्ली	मनुस्मृति (९–१०)	लेखक	१,०२,५७०/–
१५.	डा. (श्रीमती) ए.अरुन्धती दिल्ली	वास्तुवैद्य इन मनोसुलासा	लेखक	२,९०,६०६/–
१६.	डा. राजकुमारी त्रिकहा दिल्ली	महाभारत में योग विद्या	जे.पी. पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली	४५,२११/–
१७.	डा. सलिल नायक उड़ीसा	कन्सेप्ट ऑफ रिबर्थ	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	६९,१४७/–
१८.	डा. ओंकार नाथ तिवारी पटना	ऋग्वेदस्य दार्शनिकधरातलम्	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	४२,०१४/–
१९.	डा. श्रद्धा शुक्ला दिल्ली	श्रीमत्स्य पुराणम्	नाग पब्लिशर्स दिल्ली	२,२०,११०/–
२०.	डा. रीना अस्थाना हरदोई (उत्तरप्रदेश)	गृह्यनुष्ठानों का सांस्कृतिक अन्वेषण	नाग पब्लिशर्स दिल्ली	६४,५२०/–
२१.	डा. शशीनाथ झा दरभंगा	श्री मधुधरा	नाग पब्लिशर्स दिल्ली	२७,४१०/–
२२.	डा. बटोही झा लखनऊ	गीतानन्तरसम्	मिहिर प्रकाशन लखनऊ	२८,०३३/–
२३.	डा. बलभद्र प्रसाद शास्त्री बरेली	रूपक पञ्चकम्	वाग देवता प्रकाशन बरेली	२५,४७२/–
२४.	प्रो. रमेश चंद दिल्ली	हम्मीर महाकाव्य	प्रकाश पब्लिशर्स गाजियाबाद	३१,२१६/–
२५.	डा. रविकान्त मणि जयपुर	उदाहरणचन्द्रिकाया: समीक्षात्मकमध्ययनम्	हंस प्रकाशन, जयपुर	२३,०४८/–
२६.	प्रो. नीलकंठ गुरतु साहिबाबाद (उत्तरप्रदेश)	परमार्थसार	पेनमन प्रकाशन दिल्ली	३९,२६०/–
२७.	डा. श्याम बाला राय इलाहाबाद	ब्रह्मसूत्र वृत्ति मिताक्षरा का समीक्षात्मक अध्ययन	निर्मल प्रकाशन, गाजीपुर (उत्तरप्रदेश)	२४,९३७/–
२८.	डा. श्रीधर वशिष्ठ गुड़गाँव	श्रीयादव प्रकाश कृत पिंगलकछन्दो– विचिति भाष्यम्	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	५३,४१५/–
२९.	डा. नमिता गर्ग, दिल्ली	वररुचि एवं हेमचन्द्र विरचित प्राकृत व्याकरण	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	६३,३११/–

३०.	डा. हरिनारायण तिवारी गरली (एच.पी.)	पातञ्जल महाभाष्यम् अष्टमोऽध्याय	संध्या प्रकाशन, वाराणसी	४४,६०६/–
३१.	डा. ज्ञान प्रकाश शास्त्री मेनपुरी	पाणिनी प्रत्ययार्थ कोष	प्रणव प्रकाशन, हरिद्वार	१,५१,७०४/–
३२.	डा. इच्छाराम द्विवेदी दिल्ली	प्रणव रचनावली	देववाणी परिषद्, दिल्ली	८७,४४२/–
३३.	डा. प्रवेश सक्सेना दिल्ली	वेदों में पर्यावरण संरक्षण	मनीप प्रकाशन, दिल्ली	३१,९९४/–
३४.	डा. सुरेन्द्र पाल सिंह इलाहाबाद	जातक विमर्श	साहित्य भण्डार, इलाहाबाद	३९,८७९/–

संस्थान ने उपर्युक्त ग्रन्थों के निर्माण हेतु रु. ३०.७५ लाख का प्रकाशन अनुदान जारी किया है।

ग्रन्थों की क्रय सम्बन्धी योजना का विवरण इस प्रकार है:–

आवेदकों की संख्या	प्रस्तुत किए गए शीर्षकों की संख्या	कुल क्रय शीर्षकों की संख्या
१७१	४७२	२७२

वर्ष में दी गई कुल राशि रु. ४१.७० लाख है।

दुर्लभ ग्रन्थों की पुनर्मुद्रण योजना के अन्तर्गत ६ ग्रन्थों का मुद्रण किया गया है जिन्हें भारत के और विदेश के विद्वानों द्वारा भली–भाँति स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत वर्ष में इस कार्य हेतु रु. २.६६ लाख व्यय किए गए हैं।

उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति अनुभाग के प्रधान डा. प्रकाश पाण्डेय, सहायक निदेशक (शोध और प्रकाशन) हैं। इसमें निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत हैं :–

१.	अनुभाग अधिकारी	१
२.	सहायक	१
३.	उच्च श्रेणी लिपिक	२
४.	निम्न श्रेणी लिपिक	१

यह अनुभाग देश भर में उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियों का संवितरण करता है। छात्रवृत्ति की दो श्रेणियाँ हैं :–

१. पारम्परिक पाठशालाओं के छात्रों के लिए शोध छात्रवृत्तियाँ;

२. बी.ए., एम.ए. और पी.एच.डी. तथ समकक्ष पारम्परिक पाठ्यक्रम जारी रखने हेतु उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ।

वर्ष २००३–२००४ में छात्रवृत्ति प्रदान करने का अलग–अलग विवरण निम्नलिखित है :–

क्रम सं.	पाठ्यक्रम	नवीन (प्रथम वर्ष)	नवीकरण (द्वितीय वर्ष)
१.	प्राक्शास्त्री/उत्तरमध्यमा/यू.एस.	२८०	८२
२.	इण्टर	८५१	१३४
३.	बी.ए.	१०२२	४४
४.	शास्त्री	१७६	४३
५.	एम.ए.	१८२	०९
६.	आचार्य	५३	०२
७.	पी–एच.डी.	४८	१०
८.	विद्यावारिधि	१९	४६
	कुल	**२६३१**	**३७०**

इस मद के अन्तर्गत रु. २३.५८ लाख व्यय किए गए।

६. पत्राचार पाठ्यक्रम और अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण

इसके प्रधान डा. ललित कुमार त्रिपाठी, रीडर, व्याकरण (लखनऊ विद्यापीठ से स्थानान्तरित) हैं जो संस्कृत स्वाध्याय योजना के संयोजक तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण के राष्ट्रिय संयोजक हैं। यह अनुभाग निम्नलिखित स्टाफ के साथ कार्य कर रहा है :–

१.	शोध सहायक	२
२.	अनुभाग अधिकारी	१
३.	अनुदेशक	१
४.	निम्न श्रेणी लिपिक	२
५.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	३

डा. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव, (एम.ए., एम.फिल्, पी–एच.डी.), शोध सहायक और डा. रत्न मोहन झा (एम.ए., आचार्य, पी–एच.डी.), शोध सहायक, संस्कृत स्वाध्याय योजना तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण परियोजना के लिए सहायक संयोजक के रूप में कार्यरत हैं।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने वर्ष २००३–२००४ में इस विभाग के माध्यम से निम्नलिखित योजनाएँ/कार्यक्रम संचालित किए:

१. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण कार्यक्रम

२. संस्कृत स्वाध्याय योजना

३. पत्राचार पाठ्यक्रम

४. संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

१. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को प्रायोगिक आधार पर सम्पूर्ण देश में वर्ष २००३ में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों को त्रैमासिक चक्र में संचालन हेतु स्वीकृति प्रदान की गई।

एक सौ केन्द्रों की प्रायोगिक सफलता के मूल्यांकन के पश्चात् दिसम्बर २००३ से लेकर १२०० केन्द्रों के संचालन का निर्णय किया गया। देश भर में अनुमोदित १२०० केन्द्रों की राज्य–वार स्थिति नीचे दी गई है:–

राज्य–वार आँकड़ा शीट

राज्य	केन्द्रों की संख्या	अध्येताओं की संख्या (प्राप्त आँकड़ों के आधार पर)
अण्डमान	१	३१
आन्ध्र प्रदेश	६५	२५१५

अरुणाचल प्रदेश	३	३०
असम	९६	४०९९
बिहार	२६	८९६
छत्तीसगढ़	३०	६४१
दिल्ली	३०	१०३६
गुजरात	९६	३६२६
हिमाचल प्रदेश	८	२४७
हरियाणा	५	९४
जम्मू और कश्मीर	४	३६
झारखण्ड	५	१९५
कर्नाटक	११२	४०३९
केरल	१३६	४७२७
महाराष्ट्र	५२	१९९९
मणिपुर	५	२०३
मध्य प्रदेश	१०१	६५७९
उड़ीसा	५५	२८८५
पंजाब	५	२०५
राजस्थान	४२	१८३४
तमिलनाडु	६६	२७११
उत्तराञ्चल	३७	१६३१
उत्तर प्रदेश	२०७	९०३१
पश्चिम बंगाल	१३	५२२
कुल	**१२००**	**५०,२७३**

इन केन्द्रों के अध्येताओं ने बहुत उत्साह दिखाया। पचास हजार से भी अधिक छात्रों, अध्यापकों, प्राध्यापकों, चिकित्सकों, अभियन्ताओं, बैंककर्मियों, उद्योगपतियों, अधिकारियों, वकीलों, वैज्ञानिकों, कृषकों और गृहिणियों आदि ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्राप्त

आँकड़ों पर आधारित एक विश्लेषण नीचे दिया जा रहा है :–

सहभागियों का विश्लेषण :–

१.	शिक्षक, प्रध्यापक, प्रोफेसर, पी.एच.डी., नेट	४९२२
२.	डॉक्टर, इन्जीनियर	२७४
३.	ऑफिसर (कमिश्नर, बैंक मैनेजर आदि)	१५३
४.	वकील, एल.एल.बी.	१११
५.	सेवारत/सेवानिवृत्त	७३६४
६.	छात्र	२३४११
७.	व्यापारी	१५४९
८.	सनदी लेखाकार	१२
९.	कृषक	१०३१
१०.	गृहिणियाँ	२५६७
११.	अन्य	८८७९
	कुल	**५०,२७३**

समाज की सभी जातियों और समुदायों के लोगों ने संस्कृत सीखने में अति उत्साह दिखाया। अध्येताओं के परामर्श–पत्र, पोस्ट–कार्ड, अन्तर्देशी पत्र और दूरभाष सन्देश उनकी आन्तरिक भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों के द्वारा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण के विभिन्न केन्द्रों का उद्घाटन किया गया। इन केन्द्रों के सम्यक् संचालन में संभी केन्द्राध्यक्षों, केन्द्र संयोजकों और संस्कृत शिक्षकों ने पूर्ण सहयोग दिया है। इन केन्द्रों का संचालन करने वाली संस्थाओं ने राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख समाचार–पत्रों, स्थानीय समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन, समाचार और सूचनाएँ दीं। विज्ञापनों, बैनरों और हैण्डबिलों के द्वारा भी प्रचार और प्रसार किया गया। केन्द्रों में भव्य उद्घाटन तथा समापन समारोह आयोजित किए गए।

केन्द्रों पर पाठ्य–सामग्री का मुख्य आधार प्रथमा दीक्षा की पाठ्य–सामग्री थी। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने इस सामग्री को तैयार और प्रकाशित किया है। अध्येताओं को यह सामग्री लागत–मूल्य पर उपलब्ध कराई गई। जो अध्येता न्यूनतम ७५ प्रतिशत कक्षाओं में उपस्थित रहे अथवा जिन्होंने स्थानीय केन्द्रों द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण की, उन्हें प्रथमा दीक्षा की समाप्ति पर सहभागिता प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। संस्थान ने प्रथमा दीक्षा के अन्त में अध्येताओं से पाठ्य–सामग्री के विषय में परामर्श–पत्र आमन्त्रित किए थे। अध्येताओं ने तारतम्यता, सुगम्यता, अभ्यासों के वैविध्य और शिक्षण–प्रणाली विज्ञान के दृष्टिकोण से पाठ्य–सामग्री को श्रेष्ठ माना है।

विभिन्न केन्द्रों पर त्रैमासिक पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

इन अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन न केवल देश के नगरों और महानगरों में किया गया, अपितु दूरवर्ती छोटे गाँवों और छोटे कसबों और जम्मू व कश्मीर तथा उत्तर–पूर्व राज्यों के दुर्गम क्षेत्रों में भी किया गया। संस्कृत शिक्षकों को अति दूर के स्थानों से भी आना पड़ा। परिणाम अत्यन्त सुखद एवं रोमांचक रहे।

अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन देशभर में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों (डिग्री कॉलेजों), इण्टर कॉलेजों, उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, कनिष्ठ उच्च विद्यालयों, पब्लिक स्कूलों और स्वैच्छिक संस्थाओं में किया गया।

इन केन्द्रों की सम्यक् क्रियाशीलता हेतु प्रत्येक राज्य में एक प्रान्त संयोजक को नामित किया गया। उसने सम्बद्ध राज्य में केन्द्रों, केन्द्र–संयोजकों और शिक्षकों से सम्बन्धित प्रस्ताव प्राप्त किए। विविध संस्थाओं से सीधे प्रस्ताव प्राप्त होने पर भी संस्थान द्वारा केन्द्रों के संचालन की संस्वीकृति प्रदान की गई।

प्रान्त संयोजकों की सूची

क्रमांक	राज्य	संयोजक का नाम तथा पता
१.	आन्ध्र प्रदेश	डा. डोबाराल प्रभाकर शर्मा, प्रिंसीपल, श्री.वी.जे.वी. संस्कृत कलाशाला, कोव्वूर, पश्चिम गोदावरी जिला (आं.प्र.)
२.	बिहार+झारखण्ड	डा. श्री प्रकाश पाण्डेय, लेक्चरर, संस्कृत विभाग, एल.एस. महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)
३.	दिल्ली	डा. वाई.एस. रमेश, संयोजक (संस्कृत प्रोजेक्ट), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
४.	गुजरात	डा. एच.एम. पाण्डेय, प्रिंसीपल, वडोदरा संस्कृत महाविद्यालय, वडोदरा (गुजरात)
५.	हरियाणा	डा. सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, रीडर, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
६.	जम्मू एवं काश्मीर	डा. विश्वमूर्ति शास्त्री, रीडर एवं साहित्यविभागाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, श्री रनबीर परिसर, जम्मू
७.	कर्नाटक	डा. ए.पी. सच्चिदानन्द, रीडर एवं शिक्षाविभागाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, राजीव गान्धी परिसर, शृंगेरी
८.	केरल	श्री पी.एन. शास्त्री, रीडर एवं साहित्यविभागाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गुरुवायूर परिसर, गुरुवायूर (केरल)
९.	महाराष्ट्र (विदर्भ क्षेत्र)	डा. पंकज चांदे, कुलपति, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर
१०.	महाराष्ट्र (विदर्भ क्षेत्र के बिना)	श्रीपाल भट्ट, लेक्चरर, संस्कृत विभाग, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

११.	एम.पी+छतीसगढ़	श्री लक्ष्मी निवास पाण्डेय, रीडर एवं शिक्षाविभागाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल
१२.	उड़ीसा	डा. उपेन्द्र राव, रीडर एवं साहित्यविभागाध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, श्री सदाशिव परिसर, पुरी
१३.	पंजाब+हिमाचल प्रदेश	श्री भक्तवत्सलम, प्रिंसीपल, एस.डी. आदर्श संस्कृत कालेज, दोहगी, उना (हिमाचल प्रदेश)
१४.	राजस्थान	श्री सुदेश कुमार शर्मा, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर, जयपुर
१५.	तमिलनाडु	डा. रामचन्द्रन, (पी.जी. विभाग), विवेकानन्द कालेज, मेलपुर, चेन्नई (तमिलनाडु)
१६.	उत्तरांचल	डा. बलदेव शर्मा, प्रिंसीपल, मंगला देवी कालेज, देहरादून
१७.	उत्तर प्रदेश	डा. चंद्रशेखर, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ
१८.	पश्चिम बंगाल	डा. सत्यपाद भट्टाचार्य, रीडर, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, कोलकाता

संस्थान ने इन केन्द्रों के सम्यक् संचालन को सुनिश्चित करने हेतु अपने परिसरों के शिक्षकों द्वारा इन केन्द्रों का निरीक्षण करवाया। सहस्रों अध्येताओं ने इन केन्द्रों के माध्यम से न केवल आगामी अध्ययन हेतु अपनी सकारात्मक अभिरुचि प्रदर्शित की, अपितु ज्योतिष, दर्शन, कर्मकाण्ड व पौराणिकी आदि संस्कृत के विविध विद्या विशेषों पर अल्पावधि पाठ्यक्रमों के संचालन के सुझाव भी दिए। अतः राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भविष्य में भी इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु सभी संभव प्रयास कर रहा है।

२. संस्कृत स्वाध्याय योजना

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अनुभव किया कि दूरस्थ लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संस्कृत की स्वाध्याय सामग्री को प्रकाशित करना उसका कर्त्तव्य है। पञ्चस्तरीय संस्कृत स्वाध्याय कार्यक्रम आरम्भ करने की दूरगामी परियोजना उपर्युक्त उत्तरदायित्व के बोध का परिणाम है। इस प्रकार संस्कृत स्वाध्याय योजना अस्तित्व में आई।

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष २००३–२००४ में निम्नलिखित कार्य सम्पादन हुआ।

(i) स्वाध्याय सामग्री का निर्माण

* ८५० पृष्ठों वाली द्वितीया दीक्षा की पाठ्य–सामग्री का प्रथम लेखन और सम्पादन।
* भारतीय फलित ज्योतिष, भारतीय सिद्धान्त ज्योतिष और भारतीय वास्तु–शास्त्र के आमुख और पाठ्यक्रम का निर्माण।

(ii) स्वाध्याय सामग्री का पुनर्मुद्रण

* प्रथमा दीक्षा के एक लाख और एक हजार (१,०१,०००) पुस्तक–गुच्छ का पुनर्मुद्रण हुआ जो इस प्रकार है:

प्रथमा दीक्षा का पुनर्मुद्रण	
अक्तूबर २००३	१,००० प्रतियाँ
नवम्बर २००३	३०,००० ,,
दिसम्बर २००३	२०,००० ,,
मार्च २००४	५०,००० ,,
कुल	**१,०१,००० प्रतियाँ**

(एक लाख, एक हजार प्रतियाँ)

इस वर्ष संस्थान ने अनौपचारित संस्कृत शिक्षण पर रु. २२४.०१ लाख व्यय किए।

३. पत्राचार पाठ्यक्रम

संस्थान भारत और विदेश में संस्कृत के सामान्य अध्येताओं के लिए हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से संस्कृत भाषा सीखने के लिए पत्राचार पाठ्यक्रमों का संचालन दो स्तरों पर करता है, अर्थात् (अ) संस्कृत में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम–प्रथम वर्ष (आ) संस्कृत में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम–द्वितीय वर्ष। वर्ष २००३–२००४ में लगभग १८६ छात्रों ने पत्राचार पाठ्यक्रम में पंजीयन करवाया।

४. संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने प्रत्येक केन्द्र पर १५० छात्रों के हिसाब से आठ केन्द्रों पर १२०० शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी चलाया है।

क्रमांक	प्रशिक्षण कैम्पों का स्थान	प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	संस्थान के प्रतिनिधि
१.	कोयम्बटूर	२०१	डा. एम.ए. बाबू, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गुरुवायूर परिसर, गुरुवायूर, डा. एल.एन. शर्मा, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गुरुवायूर परिसर, गुरुवायूर
२.	बैंगलोर	१६९	रामकरण मिश्रा, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, राजीव गांधी परिसर, श्रृंगेरी चंद्रकान्त, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, राजीव गांधी परिसर, श्रृंगेरी
३.	अलाहाबाद	१५१	डा. फतेह सिंह, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर
४.	भोपाल	१३८	डा. के.के. शाइन, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल

			डा. वी.एन. चौधरी, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल
५.	दिल्ली	१२२	डा. नागेन्द्र नाथ झा, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, रनवीर परिसर, जम्मू डा. बच्चा भूनाती, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, रनवीर परिसर, जम्मू
६.	लखनऊ	२१८	डा. लोकमान्य मिश्र, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनउ परिसर, लखनऊ डा. भारत भूषण, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ
७.	भुवनेश्वर	९८	डा. के. सम्बशिव मूर्ति, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, सदाशिव परिसर, पुरी श्री विजयपाल कुशुवाह, लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, सदाशिव परिसर, पुरी
८.	गुवाहाटी	१०३	डा. सुरेन्द्र झा, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ

उपर्युक्त सभी केन्द्रों पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलता–पूर्वक सम्पन्न किया गया।

७. परीक्षा अनुभाग

परीक्षा अनुभाग के प्रमुख डा. जी.आर. मिश्र (एम.ए. संस्कृत, पी–एच.डी.) उपनियन्त्रक (परीक्षा) हैं जिसमें त्रि–स्तरीय स्टाफ स्वरूप है। इस अनुभाग में निम्नलिखित स्टाफ कार्यरत हैं :–

१.	सहायक निदेशक (परीक्षा)	१
२.	अनुभाग अधिकारी	१
३.	शोध सहायक	१
४.	सहायक	३
५.	अनुदेशक	१
६.	वरिष्ठ आशुलिपिक	१
७.	निम्न श्रेणी लिपिक	३
८.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	२

संस्थान के परीक्षा पेपरों का मूल्यांकन इसका मुख्य दायित्व है। संस्थान के द्वारा प्रथमा से आचार्य, शिक्षाशास्त्री तथा विद्यावारिधि जैसी विभिन्न परीक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन परीक्षाओं में अंगीभूत परिसरों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्र प्रवेश पाते हैं। ये परीक्षाएँ विद्यापरिषद् द्वारा निर्धारित मार्गदर्शी सिद्धान्तों और इस उद्देश्य से निर्धारित पाठ्यक्रमों के अनुसार संचालित की जाती हैं।

वर्ष २००३–२००४ में विभिन्न परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों की संख्या इस प्रकार है :–

क्रमांक	कक्षा	परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण	प्रतिशत
१.	प्रथमा III	२१२	१८६	८७.७३
२.	पूर्वमध्यमा I	१००४	९६०	९९.३३
३.	पूर्वमध्यमा II	५८२	५२०	८९.३४
४.	उत्तरमध्यमा I	३३६	३१४	९३.४५
५.	उत्तरमध्यमा II	२०४	१९४	९५.०९
६.	प्राक्शास्त्री I	१०२३	९३५	९१.३९
७.	प्राक्शास्त्री II	८९०	६८०	७६.४०

८.	शास्त्री I	१३५५	१३३३	९८.३७
९.	शास्त्री II	१३६१	१३३९	९८.३८
१०.	शास्त्री III	११४२	९७९	८५.७२
११.	आचार्य I	९०६	८८७	९७.९०
१२.	आचार्य II	९०३	६९१	७६.५२
१३.	शिक्षाशास्त्री	६६२	६२५	९४.४१

विगत वर्षों की भाँति २००३–२००४ में संस्थान के अधीन विभिन्न परिसरों में शिक्षा शास्त्री पाठ्यक्रम में छात्रों के प्रवेश हेतु पी.एस.एस.टी (पूर्व शिक्षा शास्त्री परीक्षा) भी आयोजित की गई थी। परीक्षा में ८३०० छात्रों ने भाग लिया।

इस वर्ष १८ छात्रों को विद्यावारिधि उपाधि प्रदान की गई।

संस्थाओं से सम्बद्धता

संस्थान ने कुछ एक परिसरों से कार्य करना आरम्भ किया था। लेकिन बाद में कुछ निजी प्रबन्धित संस्थाओं को इससे सम्बद्ध कर लिया गया। संस्थान से सम्बद्ध संस्थाओं की सूची संलग्नक 'ग' में दी गई है। संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाली सरकारों तथा विश्वविद्यालयों के विवरण क्रमश: घ और ङ में दिए गए हैं।

८. प्रशासन अनुभाग

उपनिदेशक (प्रशासन) इस अनुभाग के प्रमुख हैं। इस वर्ष निम्नलिखित स्टाफ इसमें कार्यरत हैं :—

१.	अनुभाग अधिकारी	१
२.	सहायक	१
३.	वरिष्ठ आशुलिपिक	१
४.	उच्च श्रेणी लिपिक	२
५.	निम्न श्रेणी लिपिक	७
६.	जेस्टेटनर आपरेटर	१
७.	स्टाफ कार ड्राइवर	२
८.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१०

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में प्रशासन अनुभाग नियमों, विनिमयों और प्रक्रिया अनुसार आन्तरिक लेखा कार्य और व्यवस्था के कार्य करता है। यह संस्थान के विभिन्न अंगीभूत परिसरों को अधिक प्रभावी और कार्यकुशल बनाने के लिए आवश्यक स्थापना सहायता प्रदान करता है। यह अनुभाग प्रमुख रूप से सामान्य प्रशासन, स्थापना सम्बन्धी मामलों, सेवा और आपूर्ति, भूमि और भवन अधिग्रहण, नए परिसरों की स्थापना और प्रबन्धन समिति तथा वित्त समिति की बैठकों के संचालन आदि कार्य करता है।

जिन परिसरों के पास अपना भवन नहीं है, उनके लिए भवन–निर्माण हेतु जमीन प्राप्त करने की दिशा में प्रयास किए गए हैं। जम्मू और पुरी परिसरों के भवन निर्माण की प्रक्रिया चल रही है। इसके अतिरिक्त जम्मू, जयपुर, शृंगेरी, लखनऊ, पुरी और गुरुवायूर परिसरों में लड़कों और लड़कियों के छात्रावास, पुस्तकालय और न्यूनतम स्टाफ आवास आदि के द्वितीय चरण का निर्माण प्रक्रियाधीन है।

९. वित्त अनुभाग

इस अनुभाग के प्रमुख अधिकारी श्री सी.एस. कनियाल, उपनिदेशक (वित्त) हैं। अनुभाग में निम्नलिखित स्टाफ़ कार्यरत है:—

१.	अनुभाग अधिकारी	१
२.	उच्च श्रेणी लिपिक	३
३.	निम्न श्रेणी लिपिक	३
४.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	२

बजट (२००३—२००४)

वर्ष २००२—२००३ के रु. ६१२.५४ लाख के अप्रयुक्त शेष को वित्तीय वर्ष २००३—२००४ में समाविष्ट किया गया। मन्त्रालय के द्वारा (गत वर्ष के अव्ययित शेष सहित) रु. ३,७६२.५४ लाख का कुल बजट स्वीकृत किया गया। इस राशि को अंगीभूत एककों में निम्नलिखित प्रकार से आबंटित किया गया :—

क्रमांक	एकक का नाम	योजनागत	योजनेत्तर	कुल योग
१.	मुख्य परिसर	१२११.३७	१०७७.५५	२२८८.९२
२.	पुरी परिसर	२००.००	२०५.३४	४०५.३४
३.	जम्मू परिसर	११५.००	१८४.८९	२९९.८९
४.	इलाहाबाद परिसर	१.१७	८०.०९	८१.२६
५.	गुरुवायूर परिसर	—	१२७.७०	१२७.७०
६.	जयपुर परिसर	१०१.००	१५२.९८	२५३.९८
७.	लखनऊ परिसर	—	१२२.६३	१२२.६३
८.	शृंगेरी परिसर	६६.६६	—	६६.६६
९.	गरली परिसर	५१.५०	—	५१.५०
१०.	भोपाल परिसर	४४.४९	—	४४.४९
११.	मुम्बई परिसर	२०.१७	—	२०.१७
	कुल	**१८११.३६**	**१९५१.१८**	**३७६२.५४**

वर्ष में यह धन वेतन और भत्ते, छात्रवृत्तियाँ, प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों को राष्ट्रपति सम्मान एवं व्यय की अन्य रख—रखाव की मदों पर उपयोग में लाया गया। वित्तीय वर्ष के अन्त में रु. ७४१.४२ लाख (योजनागत रु. २२०.३५ लाख और योजनेतर रु. ५२१.०७ लाख) की धनराशि व्यय न होने के कारण अवशिष्ट रही।

लेखा

यह अनुभाग संस्थान के विविध एककों से प्राप्त लेखों के समेकन और लेखा–परीक्षा हेतु डी.जी.ए.सी.आर. को प्रस्तुत करने के लिए उत्तरदायी है। वर्ष २००३–२००४ के समेकित लेखे डी.जी.ए.सी.आर. को लेखा–परीक्षा हेतु दिनांक २८–१०–२००४ को प्रस्तुत किए गए।

भविष्य निधि खातों का अनुरक्षण

यह अनुभाग मुख्यालय के अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों के वेतन व भविष्य निधि खातों का अनुरक्षण करता है। वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर अविलम्ब प्रत्येक सदस्य को वार्षिक भविष्य निधि खाते का विवरण प्रदान किया गया है।

लेखा–परीक्षा आपत्तियों का निराकरण

वर्ष में लेखा–परीक्षा आपत्तियों को निपटाने के लिए संगठित प्रयास किए गए। इसके लिए सभी परिसरों को ये निर्देश दिए गए कि वे आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही करें। इसके अनुपालन के उत्तर लेखा–परीक्षा प्राधिकारियों को भेजे गए। इस प्रकार इस वर्ष में बहु–संख्यक लेखा–परीक्षा–आपत्तियों को निपटाया गया।

इस अनुभाग को आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों से सम्बन्धित कार्य और संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी तथा फारसी भाषाओं के लिए अपना उत्कृष्ट योगदान करने हेतु भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को मानदेय देने का कार्य भी सौंपा गया है।

१०. योजना अनुभाग

यह अनुभाग श्री सी.एस. कनियाल, उप निदेशक (वित्त) के अधीन कार्य कर रहा है। इनमें निम्नलिखित स्टाफ कार्य कर रहे हैं :–

१.	अनुभाग अधिकारी	१
२.	सहायक	१
३.	उच्च श्रेणी लिपिक	३
४.	निम्न श्रेणी लिपिक	१
५.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	१

संस्थान संस्कृत भाषा और साहित्य के संवर्धन तथा प्रचार हेतु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा अन्तरित निम्नलिखित योजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है।

(i) स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता :

इस योजना के अन्तर्गत चयनित संगठनों को संस्कृत अध्यापकों को वेतन, छात्रों को छात्रवृत्ति, पुस्तकालय अनुदान और संस्थान–भवन के निर्माण के रूप में वित्तीय सहायता की स्वीकृति दी जाती है।

इस योजना के अन्तर्गत संस्थान द्वारा वर्ष २००३–२००४ में रु. ३७८.४६ लाख की राशि व्यय की गई थी। इस वर्ष में ७९३ संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

(ii) अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा प्रतियोगिता

संस्थान देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा आयोजित करता है जिससे पारम्परिक संस्कृत छात्रों को शास्त्रीय संस्कृत भाषा में आशु भाषण में प्रोत्साहित किया जा सके। समस्या–पूर्ति की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। प्रत्येक राज्य सरकार/संघ शासित प्रदेश सरकार से आठ शास्त्रीय विषयों में प्रतियोगिता हेतु एक अध्यापक सहित आठ सहभागियों के नाम भेजने का अनुरोध किया जाता है। प्रत्येक में सर्वोत्तम प्रतियोगी को एक पदक और प्रमाण–पत्र प्रदान किया जाता है। साथ में उत्तमता के क्रम में अर्थात् क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रु. ८००/–, रु. ५००/– और रु. ३००/– के नकद पुरस्कार दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों के अतिरिक्त विजेताओं को पदक भी दिए जाते हैं। इस अवधि में श्लोकान्त्याक्षरी की पुरस्कार राशि को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के रूप में परिशोधित करके रु. ३०००/–, रु. २०००/– और रु. १०००/– कर दिया गया है।

वर्तमान दस विषयों के अतिरिक्त ''शास्त्र शलाका परीक्षा'' को भी आरम्भ किया गया है। लखनऊ में गत वर्ष की प्रतियोगिताओं में घोषित अनुसार ''शास्त्र शलाका परीक्षा'' निम्नलिखित तीन विषयों में जयपुर में आयोजित की गई।

१.	व्याकरण	व्याकरण सिद्धान्त कौमुदीय संज्ञा परिभाषा–पञ्च सन्धि, स्त्री–प्रत्यय, कारक प्रकरण
२.	न्याय	दैनकरी साहित्य न्याय सिद्धान्त मुक्तावली का अनुमानशब्दखण्ड
३.	काव्य	मेघदूतम् (कालिदास का)

इस प्रतियोगिता का स्वरूप भारत की शास्त्र शिक्षण पद्धति की प्राचीन परम्परा से लिया गया है जिसमें छात्र को व्याख्या सहित मूल–पाठ स्मरण करना होता है और "रजत शलाका" के द्वारा व्यक्त बिन्दु का वर्णन और व्याख्या करना अपेक्षित होता है। इस कठिन प्रतियोगिता का लक्ष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना है और छात्र की स्मरण–शक्ति को तीक्ष्ण करना है। इस वर्ष में इस कार्य हेतु रु. ५.०० लाख की राशि व्यय की गई।

इस प्रतियोगिता के तीन भाग हैं :

१. कण्ठ–पाठ परीक्षणम् : प्रतियोगी को विशेषज्ञों के परितोष होने तक प्रदत्त पाठ की पंक्तियों को अपनी स्मरण–शक्ति द्वारा सुनाना होता है।

२. व्याख्यान परीक्षणम् : प्रतियोगी को विशेषज्ञों के परितोष होने तक व्यक्त–पाठ की व्याख्या देखकर अथवा बिना देखे करनी होती है।

३. प्रश्न समाधानम् : प्रतियोगी को शलाका द्वारा व्यक्त मूल–पाठ के व्यक्त भाग से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना होता है। अर्हता के लिए अर्हकारी अंक ५० प्रतिशत हैं।

इस प्रकार शलाका को प्रत्येक प्रतियोगी के लिए नौ बार व्यक्त करना होता है।

प्रत्येक राज्य से प्रत्येक विषय (कुल तीन) में एक तीक्ष्ण–बुद्धि प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता हेतु अनुमति प्रदान की जाती है।

पदक, प्रमाण–पत्र तथा रु. ३०००/–, रु. २०००/– और रु. १०००/– की राशि प्रत्येक विषय में क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के विजेताओं को पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाती है।

(iii) शास्त्र चूड़ामणि योजना

इस योजना के अन्तर्गत आदर्श संस्कृत पाठशालाओं और राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे संस्कृत महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं स्वैच्छिक संगठनों में सेवानिवृत्त प्रख्यात संस्कृत विद्वानों की सेवाओं का उपयोग किया जाता है।

इस योजना को आरम्भ करने का उद्देश्य यह है कि परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षा प्रदान करने वाले केन्द्रों में विभिन्न शास्त्रीय विषयों के गहन अध्ययन को संरक्षित किया जा सके। योजना के अनुसार परम्परागत संस्कृत विद्वानों की नियुक्ति विभिन्न संगठनों में की जाती है। प्रत्येक विद्वान् को रु. २५००/– प्रति माह दो वर्ष की अवधि के लिए दिए जाते हैं। सहायक–अनुदान समिति की संस्तुति पर एक वर्ष के लिए इनकी नियुक्ति का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है।

इस योजना के अन्तर्गत रु. २१.५४ व्यय किए गए।

(iv) व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना

इस योजना के अन्तर्गत चुने हुए संगठनों को ज्योतिष, कर्म–काण्ड, पुरालिपि–शास्त्र, सूची–निर्माण, पाण्डुलिपि–विज्ञान, संस्कृत आशुलिपि और टंकण आदि विद्या विशेषों में कार्यशालाओं के आयोजन तथा प्रायोगिक प्रशिक्षण के संचालन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत (२००३–०४ में) रु. १.४८ लाख व्यय किए गए।

(v) आदर्श संस्कृत महाविद्यालय / शोध संस्थान

इस योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों में २३ संस्थाएँ संस्थान के अधीन चल रही हैं। इस योजना के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त संस्थाओं को व्यय की आवर्ती मदों पर ९५% तथा अनावर्ती मदों पर ७५% अनुदान दिया जाता है। इस वर्ष योजना में रु. २८३.२३ लाख तथा योजनेतर में २०१.९२ लाख रुपए की धनराशि संस्थान के द्वारा इन संस्थाओं को दी गई।

(vi) संस्कृत शब्दकोश परियोजना

ऐतिहासिक सिद्धान्तों के आधार पर १५०० ई.पू. से १९०० ई. तक की अवधि का एक अतिव्यापक संस्कृत शब्दकोश डेकन कॉलेज पूना के द्वारा तैयार किया जा रहा है। यह परियोजना वर्ष १९४८ से आरम्भ की गई थी। डेकन कॉलेज, पूना का संस्कृत शब्दकोश परियोजना विभाग प्रधान सम्पादक की अध्यक्षता में कार्य कर रहा है और अब तक इस परियोजना में शब्दकोश के ३५२८ मुद्रित पृष्ठों से युक्त ७ खण्ड–भाग १ प्रकाशित किए गए हैं। कार्य चल रहा है। यह परियोजना मुख्यत: भारत सरकार के द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है तथा महाराष्ट्र सरकार के द्वारा भी कुछ वित्तीय सहायता दी जाती है। वर्ष २००३–२००४ में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने संस्कृत शब्दकोश परियोजना के लिए ३७ लाख रुपए की धनराशि स्वीकृत की।

(vii) भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को मानदेय राशि

भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को संस्थान प्रति वर्ष ५०,०००/– रुपए की मानदेय राशि देता है।

इस वर्ष के दौरान इस मद में रु. १२०.७१ लाख व्यय किए गए।

(viii) उत्तर –पूर्व क्षेत्रों में संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन

वर्ष २००३–२००४ में संस्थान ने देश के उत्तर–पूर्व क्षेत्रों में संस्कृत भाषा के अध्ययन, प्रसार और प्रोत्साहन हेतु रु. ३७.३३ लाख व्यय किए।

१०.१ पुस्तकालय

संस्थान में शैक्षणिक कार्यकलापों और आगन्तुक विद्वानों की सुविधा हेतु ५००० से भी अधिक संस्कृत ग्रन्थों से युक्त पुस्तकालय है। अनुभाग की प्रधान डा. (श्रीमती) शुक्ला मुखर्जी, पुस्तकालयाध्यक्ष हैं जो निम्नलिखित कर्मचारियों के साथ विक्रय व कम्प्यूटर के कार्यों की देखभाल भी करती हैं :

१.	पुस्तकालय सहायक	१
२.	सहायक	१
३.	निम्न श्रेणी लिपिक	१
४.	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	२

अनुभाग ने भोपाल और मुम्बई परिसरों को कम्प्यूटर प्रदान किए हैं। संस्थान के पूर्व शिक्षा शास्त्री परिणाम वेबसाइट पर २००२–०३ से प्रारम्भ किए गए हैं। वर्ष में प्राप्त ग्रन्थों का विवरण तथा बिक्री आय निम्नलिखित है :

पुस्तकालय

१.	क्रीत ग्रन्थ	रु. ३०,०१४.००
२.	उपहार के रूप में प्राप्त ग्रन्थ	रु. १,०८,११५.००

विक्रय

१.	पुनर्मुद्रित दुर्लभ ग्रन्थ	रु. १२.४५ लाख
२.	संस्थान के प्रकाशन	रु. २१.३३ लाख
	कुल योग	रु. ३३.७८ लाख

११. परिसर

११.१ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
श्री गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

परिसर विवरण

इलाहाबाद परिसर एक शोध संस्थान है जो राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का अंग है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की पी.एच.डी. (विद्यावारिधि) उपाधि हेतु शोधकार्य करने के लिए परिसर प्रतिवर्ष एक निश्चित संख्या में शोध छात्रों को प्रवेश देता है। इस प्रकार से प्रविष्ट शोध–छात्र विद्यापीठ के शैक्षिक स्टाफ़ के मार्गदर्शन में कार्य करते हैं तथा परिसर के पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपि अनुभाग में उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपियों का उपयोग विद्यापीठ के छात्रों और विद्वानों के लिए सीमित नहीं है अपितु सभी विद्वानों के लिए संदर्भ पुस्तकालय के रूप में खुला है। यह परिसर मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र है। परिसर संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले समाज के विभिन्न वर्गों के विद्वानों एवं शोधार्थियों को अपने पुस्तकालय की क्षमता के अनुसार उसके उपयोग के लिए आमन्त्रित करता है।

शैक्षिक स्टाफ़ के सभी सदस्य छात्रों को शोध–कार्य में मार्ग–दर्शन करने के अतिरिक्त संस्थान द्वारा दिए गए विषयों पर अपना शोध–कार्य भी करते हैं। परिसर की शोध–परियोजनाओं का कार्य न केवल वैयक्तिक रूप से अपितु सामूहिक रूप से भी किया जाता है।

संकाय सदस्यों की पार्श्विका

क्रमसं.	नाम	पदनाम	अर्हता	विशेषज्ञता
१.	डा. गोप राजू रामा	रीडर एवं प्राचार्य	विद्याप्रवीण, साहित्याचार्य, साहित्यशास्त्र, धाकरावर्ती (पी–एच.डी.) डिप्लोमा इन जर्मन	व्याकरण एवं साहित्य
२.	डा. श्रीमती एस.के. मिश्र	रीडर	साहित्याचार्य, आर्युवेदाचार्य, साहित्यशास्त्र, साहित्याचार्य, विद्यावारिधि	साहित्य
३.	डा. वी.एन. गिरि	रीडर	साहित्याचार्य, एम.ए. (संस्कृत) आचार्य (पुराणिक वेद), विद्यावारिधि	साहित्य
४.	डा. बनमाली विश्वाल	रीडर	व्याकरणाचार्य, एम.ए., एम.फिल, पी–एच.डी., नेट, साहित्याचार्य	व्याकरण साहित्य
५.	श्री श्रीराम मिश्र	सीनियर ग्रेड लेक्चरर		

६.	डा. श्रीमती सैलजा पाण्डेय	शोध सहायक	एम.ए. (संस्कृत), वेद, आचार्य (प्राकृत इतिहास), पी–एच.डी., डी.लिट.	शोध
७.	श्री राम चन्द्र	शोध सहायक	एम.ए. (संस्कृत)	शोध
८.	श्री कैलाश चन्द्र दास	शोध सहायक	एम.ए. (संस्कृत)	शोध

उपर्युक्त के अतिरिक्त विद्यापीठ के पुस्तकालय और पाण्डुलिपि अनुभाग हेतु निम्नलिखित पद भी हैं :

१.	प्रोजेक्ट ऑफिसर	१
२.	लाइब्रेरियन	१
३.	क्यूरेटर	१
४.	एसिसटेन्ट लाइब्रेरियन	२
५.	लाइब्रेरी पण्डित	१
६.	कॉपिस्ट	१

वर्ष में छात्रवृत्तियाँ प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या : १५

परिसर की शोध पत्रिका का ५६वाँ खण्ड प्रकाशित किया गया। डा. (श्रीमती) एस.के. मिश्रा द्वारा सम्पादित वार्षिक पत्रिका ''उशती'' का प्रकाशन भी किया गया। उपर्युक्त के अतिरिक्त परिसर ने ''वेदभाषा कोश'' परियोजना पर कार्य आरम्भ किया है।

गतिविधियाँ :

१. संस्कृत दिवस समारोह आयोजित किया गया।

२. उत्कृष्ट विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किए गए।

३. न्याय पर १० दिवसीय पुनश्चर्या का संचालन किया गया।

४. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण पर कक्षाओं का आयोजन किया गया।

संकाय सदस्यों की पार्श्विका :

१. डा. वी.एन. गिरि – (क) दो छात्रों ने शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किए और बाईस छात्र उनके मार्गदर्शन में शोध–कार्य कर रहे हैं।

(ख) परिसर के निम्नलिखित कार्यों को आरम्भ किया है–

I. सार समुच्चय (काव्य प्रकाश टीका) II. विवरण (न्याय सूत्र वृत्ति) III. अन्वीक्षण तत्त्वबोध।

(ग) प्रकाश (न्याय–रत्न टीका) उनकी स्वतन्त्र रचना है।

२. डा. (श्रीमती) एस.के. मिश्रा – (क) दो छात्रों ने शोध–प्रबन्ध प्रस्तुत किए हैं और अठारह छात्र उनके मार्ग–दर्शन में शोध–कार्य कर रहे हैं।

(ख) परिसर के निम्नलिखित कार्यों को आरम्भ किया है– I. कालार्चन दीपिका II. डा. गंगानाथ झा द्वारा संकलित श्लोकसंग्रह।)

(ग) विभिन्न पत्रिकाओं में चार लेख प्रकाशित हुए।

३. डा. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय – (क) परिसर के निम्नलिखित कार्यों की जिम्मेवारी ली है–
I. ऋग्वेद भाष्य कोश II. सत्योपाख्यान।

(ख) विभिन्न पत्रिकाओं में सात लेख प्रकाशित हुए।

४. डा. बनमाली विश्वाल – (क) उनके मार्गदर्शन में एक छात्र को पी.एच.डी. की उपाधि मिली।
(ख) दो ग्रन्थ मुद्रणाधीन, दो ग्रन्थ प्रकाशित, चार रचनाएँ सम्पादित और छः ग्रन्थ पुनरीक्षित किए।
(ग) सात लेख छपे।
पाँच सेमिनारों में भाग लिया और चार व्याख्यान दिए।

५. डा. कैलाश चन्द्र दास (शोध सहायक) – (क) भीम पण्डित की "परिभाषार्थमञ्जरी" के सम्पादन की सह परियोजना में लगे।

(ख) "लघुशब्देन्दुशेखर" की टीका पर कार्य कर रहे हैं।

६. श्री रामचन्द्र (शोध सहायक) – (क) "पुरुषोत्तम की विष्णुभक्ति कल्पलता" का सम्पादन कर रहे हैं।

७. श्रीमती वीणा मिश्रा (पांडुलिपि पण्डित) – (क) मङ्गलमणिमाला का अन्तिम खण्ड सम्पन्न किया।

८. डा. राम किशोर झा (कॉपिस्ट) – (क) "हठयोगप्रदीपिका" पांडुलिपि का मैथिली से देवनागरी में लिप्यन्तरण किया।
वीरेश्वरानन्द ब्रह्मचारी के "योगरत्नाकर" मूल–पाठ का सम्पादन किया।

९. डा. गोपराजु राम – विभिन्न पत्रिकाओं में चार लेख प्रकाशित हुए।

११.२ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उड़ीसा)

परम्परागत संस्कृत अध्ययन–अध्यापन में चिरकाल से सम्बद्ध, राज्य सरकार के अन्तर्गत संचालित सदाशिव संस्कृत कॉलेज, पुरी का १५ अगस्त, १९७१ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के द्वारा अधिग्रहण किया गया।

पुराने सदाशिव संस्कृत कॉलेज, पुरी का नाम बदल कर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी रखा गया। अब यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के पुरी परिसर के रूप में कार्य कर रहा है।

यह परिसर साहित्य, नव्य व्याकरण, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, ज्योतिष, अद्वैत वेदान्त, नव्य न्याय, सर्वदर्शन आदि विभिन्न विभागों में प्राक् शास्त्री से आचार्य तक शिक्षण प्रदान करता है। परिसर विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) उपाधि हेतु शोध कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता है।

इन विषयों के अतिरिक्त, संस्थान के पाठ्यक्रमों के अनुसार अंग्रेजी, हिन्दी, उड़िया, इतिहास और गणित जैसे कुछ आधुनिक विषयों का अध्यापन किया जा रहा है। परिसर में शिक्षाशास्त्री (प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं।

छात्र विवरण

२. वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	आचार्य-II	११३
२.	आचार्य-I	७६
३.	शिक्षाशास्त्री-I	१०३
४.	शास्त्री-III	४२
५.	शास्त्री-II	४१
६.	शास्त्री-I	२४
७.	प्राक्शास्त्री-II	३५
८.	प्राक्शास्त्री-I	२२
	कुल	**४५६**

३. वर्ष में छात्रवृत्तियाँ प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्रों की संख्या
१.	आचार्य-II	७९
२.	आचार्य-I	६४
३.	शास्त्री-III	३०

४.	शास्त्री-II	३६
५.	शास्त्री-I	१४
६.	शिक्षाशास्त्री	३०
७.	प्राक्शास्त्री-II	२८
८.	प्राक्शास्त्री-I	१६
	कुल	२९७

४. वार्षिक परीक्षा, २००३–२००४ के परिणामों की प्रतिशतता :–

क्रम सं.	कक्षा	प्रतिशतता (%)
१.	आचार्य-II	८६%
२.	आचार्य-I	९६%
३.	शिक्षाशास्त्री	९४%
४.	शास्त्री-III	७७%
५.	शास्त्री-II	१००%
६.	शास्त्री-I	९७%
७.	प्राक्शास्त्री-II	९४%
८.	प्राक्शास्त्री-I	१००%

५. वर्ष में छात्रावास सुविधाएँ पाने वाले छात्रों की संख्या : १२४

६. २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाले अ.जा./अ.ज.जा. छात्रों की संख्या : २५

७. २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाली छात्राओं की संख्या : २१७

८. विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) हेतु पंजीकृत छात्रों की संख्या : २३

परिसर के संकाय–सदस्यों का विवरण

	नाम	पद	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. वी.पी. हिमांशु	प्राचार्य	एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी., डी.लिट्	साहित्य
२.	डा. के. सुभारायुडु	रीडर	पी–एच.डी.	अद्वैतवेदान्त
३.	डा. आर.टी. मिश्र	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), आचार्य (साहित्य) और पुराणेतिहास, पी–एच.डी.	पुराणेतिहास

४.	डा. एफ.एम. पाण्डेय	रीडर	आचार्य (पुराणेतिहास), पी–एच.डी.	पुराणेतिहास
५.	डा. के. मिश्र	रीडर	आचार्य (धर्मशास्त्र), बी.एड., पी–एच.डी., डी.लिट्	धर्मशास्त्र
६.	डा. चौ.एन.वी.प्रसाद राय	रीडर	आचार्य (अद्वैतवेदान्त), बी.एड., पी–एच.डी.	अद्वैतवेदान्त
७.	श्री एस.वी.आर. मुर्ति	रीडर	एम.ए. (अंग्रेजी), संस्कृत में डिप्लोमा, कम्प्यूटर में सर्टिफिकेट कोर्स	अंग्रेजी
८.	डा. एस.एन. मिश्र	रीडर	आचार्य (सिद्धान्तज्योतिष) और (फलितज्योतिष), आचार्य (साहित्य), पी–एच.डी., डी.लिट्	ज्योतिष
९.	डा. ए.के. नन्दा	रीडर	आचार्य (धर्मशास्त्र), बी.एड., पी–एच.डी., डी.लिट.	धर्मशास्त्र
१०.	डा. एच.के. महापात्र	रीडर	आचार्य (व्याकरण), पी–एच.डी.	व्याकरण
११.	डा. के.वी. सौमयाजलु	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), विद्याप्रवीण, बी.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण
१२.	डा. एम.जे. भानुमुर्ति	रीडर	विद्याप्रवीण, शिक्षाचार्य, विद्यावारिधि, एम.ए. (संस्कृत)	शिक्षाचार्य
१३.	डा. सी. उपेन्द्र राय	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (पाली), बी.एड., एम.फिल्, पी–एच.डी.	साहित्य
१४.	श्री बी. प्रसाद मोहन्ती	लेक्चरर (सीनियर ग्रेड)	बी.ए., एम.पी.एड., एन.आई.एस.	शारीरिक शिक्षा
१५.	डा. श्रीमती एम. रथ	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (पुराणेतिहास), बी.एड., पी–एच.डी.	पुराणेतिहास
१६.	डा. एल.के. साहू	सीनियर लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), आचार्य (धर्मशास्त्र) पी–एच.डी., डी.लिट्	धर्मशास्त्र
१७.	डा. यू.एन. झा	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (व्याकरण), आचार्य (साहित्य), साहित्यरत्न, एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी., डी.लिट्	साहित्य
१८.	डा. एम.एम. झा	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (व्याकरण), एम.एड., पी–एच.डी.	शिक्षाशास्त्र
१९.	डा. आर.के. वर्मा	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (वेदान्त), पी.एच.डी.	वेदान्त
२०.	डा. श्रीमती सत्यम कुमारी	सीनियर लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), आचार्य (एन.एन.) एम.ए. (राजनीतिविज्ञान), पी–एच.डी.	नव्य
२१.	डा. एस.एम. रथ	लेक्चरर	आचार्य (साहित्य), विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	साहित्य
२२.	श्रीमती जी.पी. दास	लेक्चरर	आचार्य (सांख्य योग), आचार्य (सांख्यदर्शन)	सांख्य योग
२३.	डा. श्रीमती ए. परुस्ती	लेक्चरर	आचार्य (व्याकरण), बी.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण

२४.	डा. पी.के. महापात्र	लेक्चरर	आचार्य (फलितज्योतिष), विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	ज्योतिष
२५.	डा. एस.एन. आचार्य	लेक्चरर	आचार्य (साहित्य), बी.एड., पी–एच.डी.	साहित्य
२६.	डा. श्रीमती एस. मिश्र	लेक्चरर	आचार्य (फलितज्योतिष और सिद्धान्तज्योतिष), नेट, पी–एच.डी.	ज्योतिष
२७.	डा. श्रीमती एन. पाणिग्रही	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., नेट, पी–एच.डी.	शिक्षाशास्त्र
२८.	डा. के.एस.एस. मुर्ति	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (व्याकरण), विद्या, एम.ए. (तेलगू), प्रवीण, एम.एड., पी–एच.डी., डिप्लोमा (संस्कृत)	शिक्षाशास्त्र
२९.	डा. के.ई. मधुसूदन	लेक्चरर	आचार्य (नव्य), पी–एच.डी.	नव्य
३०.	श्री वी.पी. कछवाहा	लेक्चरर	आचार्य (तुलनात्मकदर्शन), एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (हिन्दी), एम.एड., नेट	शिक्षाशास्त्र
३१.	डा. एस.जी. पाण्डेय	लेक्चरर	आचार्य (अद्वैतवेदान्त), शिक्षाचार्य, (एम.एड.), एम.ए. (हिन्दी), विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	शिक्षाशास्त्र
३२.	डा. श्रीमती के. महापात्र	जुनीयर लेक्चरर सीनियर ग्रेड	एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी.	हिन्दी
३३.	डा. एन.सी. साहू	जुनीयर लेक्चरर सीनियर ग्रेड	एम.ए. (उड़िया), बी.एड., पी–एच.डी.	उड़िया
३४.	श्री पी. चौधरी महापात्र	जूनियर लेक्चरर सीनियर ग्रेड	एम.ए. (इतिहास), एम.ए. (संस्कृत), बी.एड.	इतिहास
३५.	श्री बी.के. पाधी	वरिष्ठ पी.जी.टी.	एम.ए. (इतिहास)	इतिहास
३६.	सुश्री एस. नन्दा	वरिष्ठ पी.जी.टी	एम.ए. (संस्कृत), आचार्य (साहित्य व सांख्य योग)	साहित्य
३७.	डा. (श्रीमती) एस. सतपथी	वरिष्ठ पी.जी.टी.	आचार्य (साहित्यदर्शन) एस.एस. कोविद (हिन्दी) विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	सर्वदर्शन
३८.	डा. एस. आचार्य	वरिष्ठ पी.जी.टी.	एम.ए. (लोक प्रशासन) एम.ए. (हिन्दी व संस्कृत), एम.एड., विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	हिन्दी
३९.	श्री पी.सी. साहू	वरिष्ठ टी.जी.टी.	एम.एस.सी., एम.एड., प्रवीण (हिन्दी), डी.सी.एस.	गणित
४०.	श्रीमती बी.एल. महन्ती	वरिष्ठ टी.जी.टी.	एम.ए. (संस्कृत), बी.एड.	साहित्य
४१.	डा. (श्रीमती) आर.एम.प्रतिहारी	वरिष्ठ टी.जी.टी.	आचार्य साहित्य व विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	साहित्य

४२.	श्री डी.पी. दास महापात्र	वरिष्ठ टी.जी.टी.	एम.ए. (इतिहास)	इतिहास
४३.	डा. एन.के. पाण्डेय	टी.जी.टी.	आचार्य (व्या.) विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	व्याकरण

अंशकालिक प्रध्यापक :

१.	पंडित त्रिलोचन मिश्रा	सांख्ययोग
२.	डा. विश्वरंजन पति	ज्योतिष
३.	डा. जुधिस्टर साहू	व्याकरण
४.	डा. पवन कुमार	शिक्षा–शास्त्री
५.	श्री एस.के. सतपथी	वरिष्ठ प्रशिक्षक (कम्प्यूटर)
६.	श्री विश्वनाथ मिश्र	कनिष्ठ प्रशिक्षक

संस्थान जिन विभिन्न विषयों में पूर्णकालिक अध्यापकों का प्रबन्ध न कर सका, उनमें अंशकालिक प्राध्यापक रखे गए। वर्ष में परिसर के शैक्षिक स्टाफ ने विविध सम्मेलनों व संगोष्ठियों में भाग ग्रहण किया।

११.३ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
श्री रणवीर परिसर, जम्मू तवी, जम्मू और कश्मीर

जम्मू एवं कश्मीर के पूर्व महाराज श्री रणवीर सिंह जी के द्वारा संस्थापित श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का अधिग्रहण १अप्रैल, १९७१ को किया गया तथा इसका नाम श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया। प्राक् शास्त्री से आचार्य तक के छात्र यहाँ साहित्य, न्याय, व्याकरण, फलित ज्योतिष और सर्वदर्शन का अध्ययन करते हैं। संस्कृत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए १९७९ में शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। शास्त्री स्तर तक पारम्परिक विषयों के साथ हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी, राजनीतिशास्त्र तथा इतिहास जैसे आधुनिक विषयों का पढ़ाया जाता है। परिसर में कम्प्यूटर शिक्षण सुविधा है। परिसर विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) प्रदान करने हेतु शोध–कार्य भी प्रदान करता है।

परिसर को कश्मीर शैव दर्शन परियोजना का उत्तरदायित्व सौंपा गया है जिसका उद्देश्य कश्मीर शैव दर्शन शब्दकोश का संकलन करना है।

विद्यापीठ किराये के भवन में अपना कार्य कर रहा है। जम्मू व कश्मीर की राज्य सरकार ने विद्यापीठ के भवन–निर्माण हेतु भलवाल में भूमि आबंटित की है और भवन–निर्माण का कार्य प्रगति पर है।

छात्र विवरण

२. वर्ष २००३–२००४ में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या निम्नलिखित है :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	४४
२.	प्राक्शास्त्री-II	३७
३.	शास्त्री-I	७२
४.	शास्त्री-II	६७
५.	शास्त्री-III	६२
६.	शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)	१००
७.	ज्योतिषाचार्य-I	१५
८.	ज्योतिषाचार्य-II	७
९.	साहित्याचार्य-I	१८
१०.	व्याकरणाचार्य-I	८
११.	व्याकरणाचार्य-II	६
१२.	सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य-I	१
	कुल	४३७

३. वर्ष में छात्रवृत्तियाँ प्राप्त करने वाले छात्रों की कक्षावार संख्या :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	३०
२.	प्राक्शास्त्री-II	३०
३.	शास्त्री-I	५०
४.	शास्त्री-II	४७
५.	शास्त्री-III	४२
६.	शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)	५०
७.	ज्योतिषाचार्य-I	१५
८.	ज्योतिषाचार्य-II	१७
९.	साहित्याचार्य-I	१५
१०.	साहित्याचार्य-II	८
११.	व्याकरणाचार्य-I	६
१२.	व्याकरणाचार्य-II	१
	कुल	**३११**

४. कक्षावार परिणाम की प्रतिशतता :–

क्रम सं.	कक्षा	प्रतिशत (%)
१.	प्राक्शास्त्री-I	४२%
२.	प्राक्शास्त्री-II	२३.५७%
	उत्तरमध्यमा	१००%
३.	शास्त्री-I	९३%
४.	शास्त्री-II	८२%
५.	शास्त्री-III	७९%
६.	बी.एड. (शिक्षाशास्त्री)	८८.७२%
७.	ज्योतिषाचार्य-I	१००%
८.	ज्योतिषाचार्य-II	९०%
९.	साहित्याचार्य-I	१००%

१०.	साहित्याचार्य-II	९९%
११.	व्याकरणाचार्य-I	१००%
१२.	व्याकरणाचार्य-II	१००%

५.	वर्ष में छात्रावास सुविधाएँ पाने वाले छात्रों की संख्या	:	४०
६.	वर्ष २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाले अ.जा./ अ.ज.जा. छात्रों की संख्या	:	अ.जा.– १७, अ.ज.जा.–८, शा.वि.–४
७.	वर्ष २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाली छात्राओं की संख्या	:	५१
८.	विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) हेतु पंजीकृत छात्रों की संख्या	:	०१

संकाय–सदस्यों का विवरण

	नाम	पद	योग्यता	विशेषतता
१.	डा. जी. गगन्ना	प्राचार्य	दर्शन, आचार्य, पी–एच.डी., और डी.लिट्	वेदान्त
२.	डा. के.पी. शर्मा	रीडर	व्याकरणाचार्य, एम.ए., पी–एच.डी.	व्याकरण
३.	डा. वाई.पी. खजूरिया	रीडर	व्याकरणाचार्य, पी–एच.डी.	व्याकरण
४.	डा. आई.एम. दास	रीडर	ज्योतिषाचार्य, पी–एच.डी.	ज्योतिष
५.	डा. वासुदेव शर्मा	रीडर	ज्योतिषाचार्य, पी–एच.डी.	ज्योतिष
६.	डा. वी.एम. शास्त्री	रीडर	साहित्याचार्य, पी–एच.डी.	साहित्य
७.	डा. आर.सी. शास्त्री	रीडर	साहित्याचार्य, एम.ए., पी–एच.डी.	साहित्य
८.	डा. बी.एन. झा	रीडर	दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य, आचार्य, पी–एच.डी.	दर्शन
९.	श्री के. रघुनाथ	रीडर	आचार्य (दर्शन)	दर्शन
१०.	श्री एस.सी. शर्मा	रीडर	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी
११.	डा. जी.पी. शर्मा	रीडर	बी.पी.ई., एम.पी.ई.; एम.फिल्, पी–एच.डी.	शारीरिक शिक्षा
१२.	डा. बी.बी. मिश्र	सीनियर लेक्चरर	ज्योतिषाचार्य, पी–एच.डी.	ज्योतिष
१३.	डा. बोध कुमार झा	सीनियर लेक्चरर	व्याकरणाचार्य, पी–एच.डी.	व्याकरण
१४.	डा. रामजीवन मिश्र	लेक्चरर	ज्योतिषाचार्य, पी–एच.डी., डी.लिट्	ज्योतिष
१५.	डा. विनोद कुमार गुप्त	जुनीयर लेक्चरर	एम.ए.; पी–एच.डी.	हिन्दी
१६.	श्रीमती रेनु मलहोत्रा	जुनीयर लेक्चरर	एम.ए., राजनीतिविज्ञान	राजनीतिविज्ञान
१७.	श्री के.के. मलहोत्रा	पी.जी.टी.	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी
१८.	डा. एस.के. मिश्र	पी.जी.टी	एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी.	साहित्य
१९.	डा. सी.एम. रीना	पी.जी.टी.	आचार्य (ज्योतिष)	ज्योतिष

२०.	डा. राम जी पाण्डेय	पी.जी.टी.	आचार्य (व्याकरण), विद्यावारिधि	व्याकरण
२१.	श्रीमती निर्मल कुमारी	टी.जी.टी.	एम.ए. (हिन्दी और डोगली)	डोगली
२२.	डा. राज कुमार मलहोत्रा	टी.जी.टी.	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी
२३.	डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा	टी.जी.टी.	साहित्य (आचार्य), पी–एच.डी.	साहित्य
२४.	डा. एस.एन. शर्मा	टी.जी.टी.	आचार्य (व्याकरण और साहित्य), एम.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण
२५.	श्रीमती विजय शर्मा	टी.जी.टी.	एम.ए. (हिन्दी और डोलगी)	हिन्दी
२६.	डा. राम दास शर्मा	टी.जी.टी.	आचार्य (ज्योतिष)	ज्योतिष

शिक्षा–शास्त्र विभाग :

१.	डा. बी. भारती	लेक्चरर	आचार्य (ज्योतिष), शिक्षा, आचार्य (बौद्धदर्शन), पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
२.	डा. जे.आर. शर्मा	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
३.	डा. नागेन्द्र झा	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
४.	डा. बी. पात्र	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत और हिन्दी), एम.फिल्, पी–एच.डी., एम.एड.	ट्रेनिंग
५.	डा. चन्द्रकान्त	लेक्चरर	पी–एच.डी., एम.एड.	ट्रेनिंग

शोध सहायक :

१.	डा. रमेश चन्द्र होता	शोध सहायक	आचार्य, बी.एड., विद्यावारिधि	शोध
२.	डा. मधु कुमारी मारवाह	शोध सहायक	एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (हिन्दी), पी–एच.डी.	शोध
३.	डा. सुरेश कुमार पाण्डेय	शोध सहायक	व्याकरणाचार्य, बी.एड., पी–एच.डी.	शोध
४.	डा. सुनीता गुप्ता	शोध सहायक	एम.ए., पी–एच.डी.	शोध

परिसर जिन विभिन्न विषयों में पूर्णकालिक अध्यापकों का प्रबन्ध न कर सका, उनमें अंशकालिक प्राध्यापक भी रखे गए। इस अवधि में परिसर के शैक्षणिक स्टाफ़ ने विविध सम्मेलनों व गोष्ठियों में भाग ग्रहण किया।

११.४ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
गुरुवायूर परिसर, पुरानाट्टुकड़ा, त्रिचूर (केरल)

गुरुवायूर परिसर जो संस्थान द्वारा अधिग्रहण से पूर्व साहित्य दीपिका संस्कृत विद्यापीठ के नाम से जाना जाता था, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा संचालित दस परिसरों में एक है। यह परिसर त्रिचूर के पास पुरानाट्टुकड़ा हरित क्षेत्र में स्थित है जो त्रिचूर रेलवे स्टेशन से ११ किलोमीटर की दूरी पर गुरुवायूर मन्दिर को जाने वाले मार्ग में है। लोक निर्माण विभाग द्वारा एक सुन्दर भवन का निर्माण जिसकी लागत २.२० करोड़ रुपया है किया गया है। मंत्रालय की सहायता से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने परिसर के लिए द्वितीय चरण के भवन निर्माणार्थ स्वीकृति प्रदान की है जिसमें लड़के तथा लडकियों के लिए छात्रावास, कर्मचारी आवास, पुस्तकालय भवन है तथा जिसकी लागत ६.३१ करोड़ है।

इस परिसर में अनुसंधान किया जाता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि की उपाधि मिलती है। इसके अतिरिक्त साहित्य, व्याकरण, अद्वैत वेदान्त तथा न्याय के आचार्य तथा शास्त्री स्तर तक का अध्यापन किया जाता है। परिसर में शिक्षा शास्त्री का भी अध्ययन होता है। परिसर में कम्प्यूटर शिक्षा भी उपलब्ध है।

छात्र विवरण

२. **वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	५४
२.	प्राक्शास्त्री-II	५२
३.	शास्त्री-I	५८
४.	शास्त्री-II	५८
५.	शास्त्री-III	३६
६.	आचार्य-I (साहित्य, व्याकरण वेदान्त और न्याय)	२४
७.	आचार्य-II (साहित्य, व्याकरण और वेदान्त)	२०
८.	शिक्षाशास्त्री	९७
९.	विद्यावारिधि	०१
	कुल	४००

३. २००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र विवरण
१.	प्राक्शास्त्री-I	३०
२.	प्राक्शास्त्री-II	३०
३.	शास्त्री-I	४९
४.	शास्त्री-II	३१
५.	शास्त्री-III	२१
६.	शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) (साहित्य, व्याकरण और वेदान्त)	५०
७.	आचार्य-I (साहित्य, व्याकरण और वेदान्त)	१८
८.	आचार्य-II (साहित्य, व्याकरण और वेदान्त)	२०
९.	विद्यावारिधि	०१
	कुल	**२५०**

४. **छात्रावास सुविधा प्राप्त छात्रों की संख्या : १५**

५. **वार्षिक परीक्षा २००३–०४ का परिणाम :–**

क्र.सं.	कक्षा	प्रतिशत
१.	प्राक्शास्त्री-I	९४.११%
२.	प्राक्शास्त्री-II	९६.३१%
३.	शास्त्री-I	१००%
४.	शास्त्री-II	१००%
५.	शास्त्री-III	८६.३३%
६.	आचार्य-I	१००%
७.	आचार्य-II	१००%
८.	शिक्षाशास्त्री	९१.३७%

संकाय सदस्यों का विवरण

	नाम	पदनाम	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. एन.आर. कन्नन	प्राचार्य	वेद विद्वत् शिरोमणि (न्याय, मिमांसा वेदान्त) विद्यावारिधि, डी.लीट.	न्याय
२.	डा. के.टी. माधवन	रीडर	एम.ए. (साहित्य), पी–एच.डी.	साहित्य
३.	डा. एम.के. एन्ड्रूज	रीडर	आचार्य (नव्य व्याकरण) विद्यावारिधि	व्याकरण
४.	डा. वी.के. शैलजा	रीडर	एम.ए. (व्याकरण), पी–एच.डी.	व्याकरण
५.	डा. सी.एल. सिसिले	रीडर	व्याकरणाचार्य, विद्यावारिधि	व्याकरण
६.	श्री के.एल. सबस्टेन	रीडर	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी
७.	डा. पी.एन. शास्त्री	रीडर	वेदान्तुतामा, एम.ए. (संस्कृत) एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., पी–एच.डी.	शैक्षणिक
८.	डा. च. एल.एन. शर्मा	रीडर	विद्याप्रवीण (साहित्य और व्याकरण) पी–एच.डी., एम.ए., एम.एड.	शैक्षणिक
९.	डा. एम.ए. बाबू	रीडर	एम.ए., पी–एच.डी.	शैक्षणिक
१०.	डा. पी. इन्दिरा	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), विद्यावारिधि	साहित्य
११.	डा. प्रतिभा आर.	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (आधुनिक वेदान्त) पी–एच.डी.	वेदान्त
१२.	श्री एस.एस. शर्मा	लेक्चरर	एम.ए. (वेदान्त) बी.एड., एम.फिल्	वेदान्त
१३.	डा. के. कादम्बिनी	लेक्चरर	आचार्य (नव्य व्याकरण) एम.ए., एम.एड.	शैक्षणिक
१४.	डा. सी. सान्था	जूनियर लेक्चरर	साहित्याचार्य, विद्यावारिधि	साहित्य
१५.	डा. पी.वी. श्रीदेवी	जूनियर लेक्चरर	साहित्याचार्य, विद्यावारिधि	साहित्य
१६.	डा. के. सरलादेवी	जूनियर लेक्चरर	एम.ए. (व्याकरण), पी–एच.डी.	व्याकरण
१७.	डा. पी. उनीथान	जूनियर लेक्चरर	व्याकरणाचार्य, विद्यावारिधि	व्याकरण

१८.	श्रीमति के.यू. जया	जूनियर लेक्चरर	एम.ए. (इतिहास)	इतिहास
१९.	डा. वी.के. सुवेदा	जूनियर लेक्चरर	एम.ए. (हिन्दी)	हिन्दी
२०.	डा. के.ए. जैसी	जूनियर लेक्चरर	एम.ए., बी.एड.	मलयालम
२१.	डा. ए.एम.सी.टी. नामबुदिरि	जूनियर लेक्चरर	साहित्याचार्य	साहित्य

परिसर में जहां पूर्णकालिक शिक्षकों की व्यवस्था नहीं हो सकी उन विषयों में अंशकालिक शिक्षकों की नियुक्ति की गयी। रिपोर्ट वर्ष के दौरान परिसर के शिक्षकों ने कई संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लिया।

रिपोर्ट वर्ष के दौरान परिसर ने निम्नलिखित कार्य किए :

विस्तार व्याख्यान माला :

२००३–२००४ शैक्षिक वर्ष में तीन विस्तार व्याख्यान आयोजित किए गए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डा. चन्द्रमौलि को आमन्त्रित किया गया। उन्होंने साहित्य पर भाषण दिया। श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी के अद्वैत वेदान्त के रीडर डा. रामकृष्ण भट तथा प्रो. वासुदेवन पोत्ति ने अपने–अपने क्षेत्र में विद्वत्तापूर्ण भाषणों द्वारा छात्रों का प्रबोधन किया।

संस्कृत दिवस समारोह :

श्रावण पूर्णिमा पर पड़ने वाला संस्कृत दिवस १३ व १४ अगस्त, २००३ को दो दिन तक उचित ढंग से मनाया गया। श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी के विभागाध्यक्ष डा. जी. गंगाधरन नायर मुख्य अतिथि थे।

छात्र कल्याण संघ ने संस्कृत प्रतिष्ठान के साथ मिलकर जनसाधारण में संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु "स्वाति" ०४ नामक शानदार कार्यक्रम का संचालन किया। एक जनवरी ०४ से १२ जनवरी ०४ के बीच ५१केन्द्रों में एक साथ संस्कृत में भाषित पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन १२ जनवरी, २००४ को किया गया। त्रिचूर के टाऊन हाल में संस्कृत महासंगम का आयोजन किया गया। राज्य भर के महाविद्यालयों के छात्रों के लिए व्याकरण, निबन्ध लेखन, अक्षर श्लोक, वक्तृता प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। अन्य कार्यक्रमों में संस्कृत विद्वानों का सम्मान, पारम्परिक कला निष्पादन आदि भी थे।

अतिरिक्त विविध गतिविधियाँ

मुख्यालय द्वारा नई दिल्ली में दिनांक ३ और ४ मार्च, २००४ को आयोजित नाटक प्रतियोगिता में छात्रों की एक टीम ने भगवत्ताजुकम् नामक संस्कृत नाटक का मंचन किया। परिसर ने नाटक में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया और माधवन वी.बी. आचार्य प्रथम वर्ष (वेदान्त) को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। शिबु पी.आर. तथा इन्दु पी.पी. को नाटक सहभागिता पुरस्कार मिले।

संकाय सदस्यों ने राष्ट्रीय सम्मेलनों, प्राच्य सम्मेलनों तथा संस्कृत कार्यशालाओं आदि में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

११.५ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर (राजस्थान)

यह परिसर राजस्थान संस्कृत अकादमी की संस्तुतियों के आधार पर राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री के द्वारा तत्कालीन शिक्षामंत्री, भारत सरकार को किये गये अनुरोध के फलस्वरूप मई १९८३ में स्थापित हुआ। इस परिसर के पास जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा ७.२७ एकड़ भूमि त्रिवेणी नगर सी स्कीम एरिया में उपलब्ध कराई गयी है। परिसर जयपुर रेलवे स्टेशन से १२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। परिसर का मुख्य भवन का निर्माण रु. २.९८ करोड़ की लागत से लगभग पूर्ण है। परिसर में रु. २.९३ करोड़ की लागत पर द्वितीय चरण का निर्माण कार्य, जिसमें छात्र–छात्राओं का छात्रावास, कर्मचारी निवास आदि हैं, स्वीकृत किया जा चुका है।

परिसर में शोध कार्य होता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इसके अतिरिक्त साहित्य, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन में आचार्य एवं शास्त्री स्तर का अध्ययन होता है और शिक्षा शास्त्री, शास्त्री के स्तर का भी अध्ययन परिसर में होता है। परिसर में कम्प्यूटर शिक्षा भी उपलब्ध है।

छात्र विवरण

२. **वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	३९
२.	प्राक्शास्त्री-II	२६
३.	शास्त्री-I	१२४
४.	शास्त्री-II	९४
५.	शास्त्री-III	६०
६.	आचार्य-I	९६
७.	आचार्य-II	५४
८.	शिक्षाशास्त्री	९८
	कुल	६०१

३. **२००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति का विवरण :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र विवरण
१.	प्राक्शास्त्री-I	३०
२.	प्राक्शास्त्री-II	२१

३.	शास्त्री-I	६०
४.	शास्त्री-II	६०
५.	शास्त्री-III	४६
६.	आचार्य-I	५३
७.	आचार्य-II	३९
८.	शिक्षाशास्त्री	३०
	कुल	३३९

४. २००३–२००४ वार्षिक परीक्षा का परिणाम :–

क्र.सं.	कक्षा	प्रतिशत (%)
१.	प्राक्शास्त्री-I	९३
२.	प्राक्शास्त्री-II	९६.५५
३.	शास्त्री-I	९६.०७
४.	शास्त्री-II	८६.५०
५.	शास्त्री-III	१००
६.	आचार्य-I	८८.७०
७.	आचार्य-I I	९४.११
८.	शिक्षाशास्त्री	९६.९३

५. वर्ष में छात्रावास सुविधाएँ पाने वाले छात्रों की संख्या : ५९

६. वर्ष २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाले अ.जा./अ.ज.जा. छात्रों की संख्या : अ.जा–२६, अ.ज.जा–२८

७. वर्ष २००३–२००४ में प्रवेश पाने वाली छात्राओं की संख्या : ५८

८. विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) हेतु पंजीकृत छात्रों की संख्या : २६

संकाय–सदस्यों का विवरण

	नाम	पद	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. आर.के. शुक्ल	प्राचार्य	आचार्य (नव्य और प्राच्य व्याकरण) पी–एच.डी.	व्याकरण
२.	डा. सतिश कैलावट	रीडर	एम.ए. (संस्कृत, इतिहास और भौतिक विज्ञान) पी–एच.डी.	राजनीतिशास्त्र

३.	डा. दामोदर शास्त्री	रीडर	एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी और प्राकृत) आचार्य (व्याकरण, सर्वदर्शन और जैनदर्शन) पी–एच.डी.	जैनदर्शन
४.	डा. जगतनारायण पाण्डेय	रीडर	आचार्य (साहित्य) एम.ए. (संस्कृत) पी–एच.डी.	साहित्य
५.	डा. कमलनयन शर्मा	रीडर	आचार्य (मिमांसा, वेदान्त और धर्मशास्त्र), एम.ए., पी–एच.डी.	धर्मशास्त्र
६.	डा. के.सी. चतुर्वेदी	रीडर	आचार्य (साहित्य और व्याकरण) एम.ए., पी–एच.डी.	साहित्य
७.	डा. वाई.एस.रमेश	रीडर	आचार्य (साहित्य), शिक्षा आचार्य विद्यावारिधि	ट्रेनिंग
८.	डा. श्रीमति भागवती सुदेश	रीडर	आचार्य (धर्मशास्त्र), एम.एड., पी–एच.डी.	धर्मशास्त्र
९.	डा. शिवकान्त झा	रीडर	आचार्य (नव्य व्याकरण) बी.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण
१०.	डा. टी.के. शर्मा	रीडर	आचार्य (साहित्य), एम.ए. (दर्शनशास्त्र), पी–एच.डी. (दर्शनशास्त्र), एम.एड.	ट्रेनिंग
११.	डा. श्रीयंश कुमार सिंघै	रीडर	आचार्य (जैनदर्शन) एम.ए. (संस्कृत) पी–एच.डी.	जैनदर्शन
१२.	डा. सुदेश कुमार शर्मा	रीडर	आचार्य (फलित, ज्योतिष और सिद्धान्त ज्योतिष), विद्यावारिधि, एम.एड.	ट्रेनिंग
१३.	डा. श्रीमती सन्तोष मित्तल	रीडर	एम.ए. (संस्कृत और हिन्दी) एम.एड., पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
१४.	डा. फतेह सिंह	रीडर	एम.ए. (संस्कृत शिक्षाशास्त्री) विद्यावारिधि, शिक्षा में पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
१५.	डा. सोहन लाल पाण्डेय	रीडर	एम.ए. (संस्कृत) बी.एड., एम.एड., पी–एच.डी.	ट्रेनिंग
१६.	डा. के.पी. केशवान	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी., एम.ए. (मलयालम)	साहित्य

१७.	श्री ओमप्रकाश वड़ाना	सीनियर ग्रेड लेक्चरर	एम.ए. (इतिहास), डी.पी.एड., एम.पी.एड., एम.फील.	शारीरिक शिक्षण
१८.	डा. श्रीधर मिश्रा	सीनियर लेक्चरर	आचार्य (व्याकरण और साहित्य) विद्यावारिधि	व्याकरण
१९.	डा. ईश्वर भट्ट	सीनियर लेक्चरर	आचार्य, विद्यावारिधि	ज्योतिष
२०.	डा. रामाकान्त पाण्डेय	लेक्चरर	एम.ए., पी–एच.डी.	साहित्य
२१.	श्री बटीलाल मीना	लेक्चरर	एम.ए., एम.एड.	ट्रेनिंग

अंशकालिक व्याख्याता :–

१.	डा. मदन मोहन शर्मा	धर्मशास्त्र
२.	श्री रामकिशोर योगी	समाजशास्त्र
३.	श्री राजकुमार मदन	अंग्रेजी
४.	डा. प्रेमप्रकाश भट्ट	हिन्दी
५.	श्री श्याम सुन्दर	ट्रेनिंग
६.	श्री कुलदीप तिवारी	कम्प्यूटर
७.	डा. कैलाश चन्द्र शर्मा	ज्योतिष
८.	श्री शक्तिधर मिश्रा	व्याकरण
९.	डा. रूपनारायण त्रिपाठी	साहित्य

अतिरिक्त गतिविधियां

वर्ष २००३–२००४ में अखिल भारतीय संस्कृत वक्तृता प्रतियोगिता का आयोजन परिसर में किया गया। परिसर के निम्नलिखित छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किए –

१. दुर्गा प्रसाद शर्मा – व्याकरण शलाका विषय पर द्वितीय स्थान, रजत पदक और रु. २०००/– नकद।
२. घनश्याम शर्मा – साहित्य शलाका विषय पर द्वितीय स्थान, रजत पदक और रु. २०००/– नकद।
३. कुमारी अंजना पाण्डेय – साहित्य शलाका विषय पर तृतीय स्थान और रु. ५००/– नकद।

इनके अतिरिक्त परिसर में कालिदास के नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का मञ्चन किया गया और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

११.६ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर (उ.प्र.)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ जुलाई, १९८३ में स्थापित किया गया। इस परिसर के लिए १० एकड़ भूमि गोमती नगर, विशाल खण्ड में लखनऊ विकास प्राधिकरण से प्राप्त की गयी है। यह रेलवे स्टेशन से १२ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा परिसर में रु. २.७६ करोड़ की लागत से भवन का निर्माण किया गया है। परिसर में द्वितीय चरण के भवन निर्माण हेतु जिसमें छात्र–छात्राओं के लिए छात्रावास एवं कर्मचारी आवास सम्मिलित है रु. ३.५२ करोड़ स्वीकृत किये जा चुके हैं। परिसर में शोध कार्य होता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इसके साथ–साथ साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष तथा बौद्ध दर्शन में आचार्य एवं शास्त्री स्तर तक का अध्ययन होता है। शिक्षा शास्त्री, शास्त्री स्तर तक की अध्ययन सुलभ है। परिसर में कम्प्यूटर शिक्षा भी उपलब्ध है।

छात्र विवरण

२. वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	१०
२.	प्राक्शास्त्री-II	०९
३.	शास्त्री-I	२२
४.	शास्त्री-II	२४
५.	शास्त्री-III	१४
६.	आचार्य-I	५३
७.	आचार्य-II	२३
८.	शिक्षाशास्त्री	८७
	कुल	२४२

३. २००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति का विवरण :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र विवरण
१.	प्राक्शास्त्री-I	०२
२.	प्राक्शास्त्री-II	०३
३.	शास्त्री-I	०९
४.	शास्त्री-III	०८
५.	आचार्य-I	१९

६.	आचार्य-II	०८
७.	शिक्षाशास्त्री	५०
८.	पी–एच.डी.	०५
	कुल	**१०४**

४. २००३–२००४ वार्षिक परीक्षा का परिणाम :–

क्र.सं.	कक्षा	प्रतिशत (%)
१.	प्राक्शास्त्री-I	८४.६१
२.	प्राक्शास्त्री-II	१००
३.	शास्त्री-I	१००
४.	शास्त्री-II	१००
५.	शास्त्री-III	८७.०५
६.	आचार्य-I	८१.९८
७.	आचार्य-II	५२.३८
८.	शिक्षाशास्त्री	१००

वर्ष में अ.जा./अ.ज.जा. विद्यार्थियों के प्रवेश : अ.जा. – १०, अ.ज.जा. – ०८

वर्ष में महिला छात्रों की प्रवेश संख्या : ६५

वर्ष में विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) छात्रों का नामांकन : ०७

संकाय–सदस्यों का विवरण

	नाम	पदनाम	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. उमा रमण झा	प्राचार्य	एम.ए. (संस्कृत), आचार्य (न्याय) पी–एच.डी., डी.लीट	दर्शन
२.	डा. सुरेन्द्र झा	रीडर	आचार्य (व्याकरण) आचार्य (धर्मशास्त्र) शिक्षाशास्त्र, मेडिकल, विद्यावारिधि	शिक्षाशास्त्र
३.	डा. एस.एन. झा	रीडर	आचार्य (सिद्धान्त ज्योतिष) आचार्य (फलित ज्योतिष) पी–एच.डी., डी.लीट.	ज्योतिष
४.	डा. एम. चन्द्रशेखर	रीडर	आचार्य, (अ. वेदान्त) पी–एच.डी.	शिक्षाशास्त्र अद्वैत वेदान्त
५.	डा. एस.के. चर्तुवेदी	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी.	व्याकरण
६.	डा. आर.एस. मिश्रा	रीडर	आचार्य (व्याकरण), एम.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण शिक्षाशास्त्री

७.	डा. वटोही झा	रीडर	साहित्याचार्य, बी.एड., विद्यावारिधि	साहित्य
८.	डा. वी.के. जैन	रीडर	एम.ए. (पाली), आचार्य, बोद्धदर्शन, पी–एच.डी.	बोद्धदर्शन
९.	डा. एस.के. पाण्डेय	रीडर	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत और भाषा) बी.एड., पी–एच.डी.	हिन्दी
१०.	डा. विजयपाल शास्त्री	रीडर	एम.ए., आचार्य (पी–एच.डी.)	साहित्य
११.	डा. लोकमान्य मिश्र	रीडर	एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., पी–एच.डी.	शिक्षाशास्त्र
१२.	डा. धनिन्द्र कुमार झा	लेक्चरर	एम.ए. (संस्कृत), एम.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण
१३.	श्री जय प्रकाश नारायण	लेक्चरर	एम.ए., बी.एड., एम.फिल्., नेट	साहित्य
१४.	डा. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्	लेक्चरर	आचार्य, नेट	साहित्य
१५.	डा. भरत भूषण त्रिपाठी	लेक्चरर	आचार्य (नव्य व्याकरण), आचार्य (साहित्य), पी–एच.डी., नेट, जे.आर.एफ.	व्याकरण
१६.	श्री रमेश सिंह	सीनियर लेक्चरर पी.टी.आई.	एम.ए., एम.पी.एड.	स्पोर्ट्स
१७.	डा. (श्रीमती) ए. अग्रवाल	लेक्चरर	एम.ए. (मनोविज्ञान) एम.एड., पी.एच.डी.	शिक्षाशास्त्र
१८.	श्री जगन्नाथ झा	जूनियर लेक्चरर	एम.ए. (अर्थशास्त्र), एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), एल.एल.बी.	राजनीतिशास्त्र
१९.	श्रीमती कविता बेशरिया	जूनियर लेक्चरर	एम.ए. (अंग्रेजी और भाषाविज्ञान), एम.एड.	अंग्रेजी भाषा
२०.	डा. एस.पी. सिंह	जूनियर लेक्चरर		
२१.	डा. आर.बी. दुबे	शोध सहायक	एम.कॉम, बी.एड., पी–एच.डी. शोध सहायक	अर्थशास्त्र शोध

परिसर में जहां पूर्णकालिक शिक्षकों की व्यवस्था नहीं है इस वर्ष के दौरान अंशकालिक व्याख्याताओं की व्यवस्था की गयी। वर्ष के दौरान परिसर के शिक्षकों ने विभिन्न सेमिनारों एवं सम्मेलनों में भी भाग लिया।

सर्वश्री सर्वनारायण झा, विजय कुमार जैन, लोकमान्य मिश्र और जयप्रकाश नारायण संकाय सदस्यों ने सम्पादन–कार्य किया और शोध–पेपर भी प्रस्तुत किए।

११.७ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी (कर्नाटक)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने राजीव गान्धी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (अब परिसर) की स्थापना शृंगेरी में १३–१–१९९२ को की। मानव संसाधन विकास मंत्री की उपस्थिति में दिनांक ०५.०३.९२ को भारत के राष्ट्रपति के द्वारा इस परिसर का उद्घाटन किया गया। इस परिसर के लिए राज्य सरकार द्वारा १० एकड़ भूमि प्रदान की गयी है। यह परिसर कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर जिले में स्थित है जो मैंगलौर से ११० कि.मी., बंगलौर से ४५० कि.मी., उडुपी से ७० कि.मी. और शिमोगा से ६० कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शिमोगा बंगलौर से रेल रूट द्वारा जुड़ा हुआ है।

परिसर के लिए केन्द्रिय लोक निर्माण विभाग द्वारा रु. १.६३ करोड़ की लागत से भवन निर्माण किया गया है। द्वितीय चरण का निर्माण, जिसमें छात्रावास, कर्मचारी आवास सम्मिलित हैं, रु. ४.१७ करोड़ की लागत पर किया जा रहा है। परिसर में शोध कार्य किया जाता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त साहित्य, व्याकरण, अद्वैत वेदान्त, मीमांसा का अध्ययन आचार्य तथा शास्त्री स्तर पर सुलभ है। परिसर में शिक्षा–शास्त्री का भी अध्ययन होता है। परिसर में कम्प्यूटर शिक्षा की सुविधा भी उपलब्ध है।

छात्र विवरण

२. **वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	२३
२.	प्राक्शास्त्री-II	२१
३.	शास्त्री-I	२६
४.	शास्त्री-II	१४
५.	शास्त्री-III	०९
६.	आचार्य-I	०९
७.	आचार्य-II	११
८.	शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)	९३
	कुल	**२०६**

३. **२००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र विवरण
१.	प्राक्शास्त्री-I	२२
२.	प्राक्शास्त्री-II	१७
३.	शास्त्री-I	१५

४.	शास्त्री-II	०९
५.	शास्त्री-III	०६
६.	आचार्य-I	१४
७.	आचार्य-II	०२
८.	शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)	६०
	कुल	१४५

४. वर्ष में छात्रावास की सुविधा प्राप्त छात्र : ५२

५. वर्ष में अ.जा./अ.ज.जा. विद्यार्थियों का प्रवेश : अ.जा. + अ.ज.जा. — ३०

६. वर्ष में महिला छात्रों की प्रवेश संख्या : ३६

७. वर्ष में विद्यावारिधि के लिए पंजीकृत छात्र : ०९

संकाय–सदस्यों का विवरण

क्रमांक	नाम	पद	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. कमल चन्द्र योगी	प्राचार्य	शास्त्री/बी.ए. (व्याकरण और अंग्रेजी) एम.ए. (साहित्य), भाषाविज्ञान आचार्य (नव्य व्याकरण), पोस्ट एम.ए. (अंग्रेजी और हिन्दी), शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), विद्यावारिधि (व्याकरण), कम्प्यूटर विज्ञान में एडवान्स एन.एल.पी.	व्याकरण
२.	डा. ए.पी. सच्चिदानन्द	रीडर	विद्वदुत्तमा, शिक्षा शास्त्री, एम.एड., विद्यावारिधि	
३.	डा. महावलेश्वर पी. भट्ट	रीडर	विद्वदुत्तमा (एम.ए.), विद्यावारिधि	अद्वैत वेदान्त
४.	डा. ई.एम. राजन	रीडर	आचार्य (साहित्य, वेदान्त)	साहित्य
५.	डा. सुब्राय वी. भट्ट	सीनियर लेक्चरर	विद्वदुत्तमा (मीमांसा, नव्य और धर्मशास्त्र), एम.ए. (संस्कृत), विद्यावारिधि	मीमांसा
६.	डा. रमाकान्त मिश्र	लेक्चरर	शास्त्री (बी.ए.), व्याकरणाचार्य, (एम.ए.), शिक्षाशास्त्री (बी.एड. और एम.एड.) नेट, विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	शैक्षणिक
७.	डा. ई.पी. श्रीदेवी	लेक्चरर	शास्त्री (बी.ए.), शिक्षाशास्त्री, बी.एड., आचार्य (एम.ए.), विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	साहित्य

८.	श्री के.के. हर्ष कुमार	लेक्चरर	बी.ए. (वेदान्त), एम.ए. (संस्कृत वेदान्त), नेट, शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), शिक्षा शास्त्री (एम.एड.)	शैक्षणिक
९.	डा. रामाचन्द्रुला बालाजी	लेक्चरर	नव्य विद्याप्रवीण (एम.ए.), एम.ए. (दर्शन और तेलगू), शिक्षा शास्त्री (बी.एड. और एम.एड.), विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	शैक्षणिक
१०.	श्री चन्द्रकान्त	लेक्चरर	विद्वत्तमा (एम.ए.), एम.ए. (संस्कृत), शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), नेट, हिन्दी रत्न, शिक्षाचार्य, विद्यावारिधि (पी–एच.डी.)	शैक्षणिक
११.	श्री सी.एस.एन. मुर्ति	लेक्चरर	व्याकरण विद्याप्रवीण, शिक्षाशास्त्र, एम.ए. (संस्कृत और तेलुगु), पी–एच.डी.	व्याकरण

अंशकालिक लेक्चचर :

१.	श्री बी.एन. विश्वनाथ	एम.ए. (इतिहास), एल.एल.बी.	इतिहास
२.	श्री उदय वी.एस.	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी
३.	डा. भगवान सामन्त राय	आचार्य वेदान्त, पी–एच.डी., नेट	अद्वैत वेदान्त
४.	श्री प्रकाश ए.के.	बी.कॉम, कम्प्यूटर में डिप्लोमा पी.जी.डी.सी.ए.	कम्प्यूटर
५.	श्री जयप्रकाश साहु	आचार्य, शिक्षा आचार्य (एम.एड.)	शिक्षा
६.	श्री रामकृष्ण समाहित	साहित्य (ऑनर्स), पी.जी. (साहित्य), एम.ए. (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री (बी.एड.)	साहित्य
७.	श्री वेंकटरमण भट	एम.ए. (संस्कृत) शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) शिक्षा शिक्षा आचार्य (एम.एड.) विद्यावारिधि	
८.	श्रीमती शमन्तका जे.एस.	बी.ए. (हिन्दी), एम.ए. (हिन्दी) एम.एड. (हिन्दी)	हिन्दी
९.	श्री वेंकप्पा के.एस.	एम.ए. (कन्नड), नेट	कन्नड

जिन परिसरों में पूर्णकालिक शिक्षकों की व्यवस्था नहीं हो सकी, उनमें इस वर्ष के दौरान अंशकालिक व्याख्याताओं की यवस्था की गई। वर्ष के दौरान परिसर के शिक्षकों ने विभिन्न गोष्ठियों/सम्मेलनों में भाग लिया।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

डा. सुब्राय वी. भट्ट ने तिरुपति विद्यापीठ में ३–१२–२००३ से २३–१२–२००३ तक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

डा. रामचन्द्रुल बालाजी ने भी इलाहाबाद परिसर में एक अल्पावधि पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लिया।

अतिरिक्त विविध कार्यकलाप :

सामान्य

विस्तार व्याख्यान माला

डा. रविशंकर मेनन, उप–नियन्त्रक परीक्षा, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने भी शिक्षाशास्त्र पर व्याख्यान दिया।

अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र

सरकारी उच्च विद्यालय, शृंगेरी के अध्यापक श्री महेश कक्कड़ द्वारा १२–२–२००४ को तीन महीने के लिए उद्घाटन किया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली द्वारा डा. रमाकान्त मिश्र तथा डा. चन्द्रकान्त को संयोजक प्रतिनियुक्त किया गया और डा. भगवान सामन्तराय को कक्षाओं को संचालित करने हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

नाटक प्रतियोगिता

छात्रों ने राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा आन्ध्र भवन, नई दिल्ली में आयोजित नाटक प्रतियोगिता में भाग लिया। साहित्य के विभागाध्यक्ष डा. ई.एम. राजन्, डा. (श्रीमती) ई.पी. श्रीदेवी, शिक्षाशास्त्र के लेक्चरर डा. आर. बालाजी ने भास के कर्णाभरण नाटक का निर्देशन किया।

गणपति महा वाक्यार्थ सभा में सहभागिता :

यह जगद्गुरु दक्षिणाम्नाय श्री शारदापीठाधीश्वर, सन्त भारती तीर्थस्वामी जी द्वारा विनायक चतुर्थी के सन्दर्भ में आयोजित तथा सभापतित्व की गई सभाओं में से एक है।

इसमें निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की :

१. डा. महाबलेश्वर पी.भट, रीडर, विभागाध्यक्ष, वेदान्त

२. डा. ई.एम. राजन, रीडर व विभागाध्यक्ष, साहित्य

३. डा. सुब्राय वी भट, सीनियर लेक्चरर, विभागाध्यक्ष मीमांसा

४. डा. रामचन्द्रुल बालाजी, शिक्षाशास्त्र में लेक्चरर

५. डा. सी.एस. एस.एन मूर्ति, लेक्चरर, विभागाध्यक्ष, व्याकरण

वैयक्तिक :

१.	डा. कमल चन्द्र योगी	(क) राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) तिरुपति में १९–८–०३ को अन्योन्य क्रिया सत्र में भाग लिया। (ख) १० अक्टूबर से १३ अक्टूबर, २००३ तक ज्योतिष पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और लेख पढ़े। अन्तिम सत्र की अध्यक्षता की और ज्योतिषीय वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित कुछ भविष्यवाणियों के बारे में दूरदर्शन को साक्षात्कार किया। (ग) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा आन्ध्रा भवन, नई दिल्ली में आयोजित नाटक प्रतियोगिता में छात्रों सहित उपस्थित रहे।
२.	डा. ए.पी. सच्चिदानन्द	(क) दिनांक १३–१२–२००३ को अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र, बेंगलूर पर सहभागिता की तथा व्याख्यान दिया। (ख) वार्षिक दिवस के सम्बन्ध में एस.एम. एस.पी. संस्कृत कॉलेज में व्याख्यान देने के लिए गए।
३.	डा. महाबलेश्वर पी. भट	(क) स्वर्णवल्ली मठ में वेदान्त वाक्यार्थ सभा में भाग लिया। (ख) बालुसेरी आदर्श संस्कृत विद्यापीठ, केरल में भाग लिया और पेपर प्रस्तुत किया।
४.	डा. ई.एम. राजन	(क) वाक्यार्थ सभा, गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुरा और कडवल्लुर अन्योन्यम, केरल में गए और सहभागिता की। (ख) बालुसेरी आदर्श विद्यापीठ, केरल में राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार में गेपर प्रस्तुत किया।
५.	डा. सुब्राय वी. भट	(क) ब्रह्मविद्या संस्थानम्, सिरसी, कर्नाटक में भाग लिया और मीमांसा पर एक पेपर प्रस्तुत किया। (ख) सोंडा स्वर्णवल्ली मठ, सिरसी में आयोजित एक सेमिनार में भाग लिया। (ग) कडवल्लुर अन्योन्यम्, केरल के संदर्भ में आयोजित वाक्यार्थ सभा में जाकर सहभागिता की।
६.	डा. रामकण्ड मिश्र	(क) नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षक सम्मेलन में सहभागिता की। (ख) कर्कला (कर्नाटक) में संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में रिसोर्स व्यक्ति के रूप में भाग लिया। (ग) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा बेंगलूर में आयोजित अनौपचारिक संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यवेक्षक के रूप में सहभागिता की। (घ) मैंगलोर में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षक संयोजक सम्मेलन में पर्यवेक्षक के रूप में सहभागिता की।
७.	डा. रामचन्द्रुल बालाजी	(क) दिनांक ८–१२–२००३ से १८–१२–२००३ तक इलाहाबाद में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तथा आइ.सी.पी.आर. द्वारा मौलिक स्रोतों के माध्यम से भारतीय तर्क शिक्षण पर कार्यशाला में २० मार्च से २३ मार्च, २००३ तक भाग लिया।
८.	श्री के.के. हर्ष कुमार	(क) श्री शंकर संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा देवस्वम् बोर्ड कॉलेज, संस्थानकोट, केरल में आयोजि राष्ट्रीय सेमिनार में पेपर प्रस्तुत किया। (ख) शिक्षक शिक्षण पर महात्मा गान्धी कॉलेज, मुवत्तुपुजा, केरल में विस्तारण व्याख्यान दिया।
९.	डा. चन्द्रकान्त	(क) स्वर्णवल्ली मठम्, सिरसी में आयोजित पूर्व मीमांसा सम्मेलन में भाग लिया और आख्यादर्थविचार विषय पर पेपर प्रस्तु किया।

(ख) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र के प्रेक्षक के रूप में प्रतिनियुक्त किए जाने पर बेंगलूर गए। इसके अतिरिक्त बीजापुर, कर्नाटक में आयोजित उत्तरी कर्नाटक शिक्षक बैठकों में प्रेक्षक के रूप में गए।

(ग) श्री जे.सी. बी.एम. कॉलेज, शृंगेरी के छात्रों के अनुरोध पर कॉमर्स क्लब में आयोजित बॉलीबाल मैच में कोच के रूप में उनका पथप्रदर्शन किया।

१०. डा. सी.एस. एस.एन. मूर्ति (क) एन.सी.ई.आर.टी. की सुलभ व्याकरण पाठ्यक्रम समिति के सदस्य के रूप में नई दिल्ली गए।

छात्र :

१. श्री सिद्धार्थ शंकर साहू ने राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा संचालित वाक्यार्थ प्रशिक्षण वर्ग में भाग ग्रहण किया।

२. प्रदीप कुमार खर्वा को स्वर्णवल्ली वाक्यार्थ प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

३. बेलगाम, कर्नाटक में आयोजित अखिल भारतीय वक्तृता प्रतियोगिता हेतु छात्रों के चयन हेतु नागराज एस.आर. को मीमांसा पर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

४. कुमारी कविता एस. भट और प्रतिभा जी. हेगडे को गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, त्रिपुनीथुर, केरल में आयोजित वाक्यार्थ प्रतियोगिताओं में क्रमशः साहित्य और अद्वैत वेदान्त के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

११.८ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
गरली परिसर (हिमाचल प्रदेश)

भारतीय स्वाधीनता के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हिमाचल प्रदेश के गरली नामक स्थान में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कार्य करना प्रारम्भ किया। इस विद्यापीठ का उद्घाटन तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री माननीय मुहीराम साइकिया के द्वारा तत्कालीन मुख्य मंत्री हिमाचल प्रदेश की उपस्थिति में १६ सितम्बर १९९७ को किया गया। परिसर अभी किराये के भवन में चल रहा है। परिसर के लिए हिमाचल सरकार से भूमि की मांग की गयी है। परिसर में शोध–कार्य किया जाता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) की उपाधि दी जाती है। इसके अलावा साहित्य, ज्योतिष एवं व्याकरण का अध्यापन आचार्य एवं शास्त्री स्तर तक होता है।

छात्र विवरण

२. **वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	५०
२.	प्राक्शास्त्री-II	६१
३.	शास्त्री-I	६७
४.	शास्त्री-II	६४
५.	शास्त्री-III	४२
६.	आचार्य-I	६९
७.	आचार्य-II	४०
	कुल	**३९३**

३. **२००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या :–**

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	४९
२.	प्राक्शास्त्री-II	४१
३.	शास्त्री-I	४०
४.	शास्त्री-II	५०
५.	शास्त्री-III	१४
६.	आचार्य-I	३८
७.	आचार्य-II	२६
	कुल	**२५८**

४. वार्षिक परीक्षा का परिणाम :–

क्र.सं.	कक्षा	प्रतिशत (%)
१.	प्राक्शास्त्री-I	१००
२.	प्राक्शास्त्री-II	९५
३.	शास्त्री-I	१००
४.	शास्त्री-II	१००
५.	शास्त्री-III	१००
६.	आचार्य-I	१००
७.	आचार्य-II	१००

५. वर्ष में अ.जा./अ.ज.जा. विद्यार्थियों के प्रवेश : २३

६. वर्ष में महिला छात्रों की प्रवेश संख्या : १७५

७. वर्ष में विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) छात्रों का नामांकन : १३

संकाय–सदस्यों का विवरण

	नाम	पद	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. हिन्द केसरी	प्राचार्य	आचार्य, पी–एच.डी.	व्याकरण
२.	डा. रामनारायण दास	रीडर	आचार्य, पी–एच.डी.	व्याकरण
३.	डा. रामलखन पाण्डेय	रीडर	आचार्य, पी–एच.डी.	साहित्य
४.	डा. हरीनारायण तिवारी	रीडर	आचार्य, पी–एच.डी., डी.लिट.	व्याकरण
५.	डा. एम.एम. पाठक	रीडर	आचार्य, पी–एच.डी.	ज्योतिष
६.	डा. रामकुमार शर्मा	लेक्चरर	आचार्य, पी–एच.डी.	साहित्य
७.	डा. हंसधर झा	लेक्चरर	आचार्य, पी–एच.डी.	ज्योतिष
८.	डा. अशोक चन्द्र गौर	लेक्चरर	आचार्य, पी–एच.डी.	व्याकरण
९.	श्री किशोर कुमार दलाई	लेक्चरर	आचार्य, नेट	साहित्य
१०.	डा. एस.के. त्रिपाठी	लेक्चरर	आचार्य, पी–एच.डी.	साहित्य

अंशकालिक लेक्चरर :

१.	डा. उमेश मिश्र	आचार्य, नेट, पी.एच.डी.	व्याकरण
२.	श्री विंध्य नाथ	आचार्य	ज्योतिष
३.	डा. आर.एन. ठाकुर	एम.ए. (इतिहास), पी–एच.डी	इतिहास

४.	श्री वी.एन. शर्मा	एम.ए. (हिन्दी)	हिन्दी
५.	श्री अमित वालिया	बी.ए. एम.सी.ए.	कम्प्यूटर
६.	श्री अश्विनी कुमार	एम.ए. (अंग्रेजी)	अंग्रेजी

परिसर में जहाँ विभिन्न विषयों में पूर्णकालिक शिक्षकों की व्यवस्था नहीं हो सकी, वहाँ अंशकालिक लेक्चररों की व्यवस्था की गई। वर्ष के दौरान परिसर के शैक्षिक स्टाफ ने विभिन्न सम्मेलनों और सेमिनारों में भाग लिया।

इस वर्ष में छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उनमें ५४ छात्रों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। जयपुर परिसर में आयोजित वक्तृता प्रतियोगिता में निम्नलिखित छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए गए :

१.	आशा देवी	व्याकरण	प्रथम
२.	विजय कुमार	ज्योतिष	द्वितीय
३.	शीतल वर्मा	श्लोकान्ताक्षरी	सान्त्वना पुरस्कार

इसके अतिरिक्त छः छात्रों ने विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत भारती अनुशीलन संस्थान, होशियारपुर में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। भारद्वाज बिन्दु को 'गीतिका' प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला। परिसर की वार्षिक पत्रिका 'हैमी' का प्रकाशन हुआ।

११.९ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
भोपाल परिसर (मध्य प्रदेश)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने सन् २००१–२००२ में भोपाल में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। राज्य सरकार द्वारा इस परिसर के लिए बरकाटुला विश्वविद्यालयके पास १० एकड़ भूमि आवंटित की है। इस परिसर की चारदीवारी सी.पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा पहले ही बना दी गई है। जब तक आबंटित भूमि पर भवन का निर्माण नहीं हो जाता, केन्द्रिय परिसर किराये के भवन में चल रहा है। परिसर में शैक्षणिक गतिविधियां २००२–२००३ से प्रारम्भ हुयीं। परिसर में शोध–कार्य होता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि की उपाधि दी जाती है। इसके अलावा साहित्य, व्याकरण तथा ज्योतिष का अध्ययन आंचार्य तथा शास्त्री स्तर तक होता है। शिक्षा शास्त्री का अध्ययन शास्त्री स्तर पर सुलभ है। परिसर में कम्प्यूटर की शिक्षा उपलब्ध है।

छात्र विवरण

२. वर्ष २००३–२००४ में कक्षावार छात्रों का प्रवेश :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री-I	२६
२.	प्राक्शास्त्री-II	१७
३.	शास्त्री-I	१५
४.	शास्त्री-II	२२
५.	शास्त्री-III	०१
६.	ज्योतिषाचार्य-I	०६
७.	साहित्याचार्य-I	०८
८.	व्याकरणाचार्य-I	०१
९.	ज्योतिषाचार्य-II	०७
१०.	साहित्याचार्य-II	०४
११.	व्याकरणाचार्य-II	०१
१२.	शिक्षाशास्त्री	९४
	कुल	२०२

३. २००३–२००४ में कक्षावार छात्रवृत्ति का विवरण :–

क्रम सं.	कक्षा	छात्र संख्या
१.	प्राक्शास्त्री	३९
२.	शास्त्री	३४
३.	आचार्य	१९

४.	शिक्षाशास्त्री	५०
	कुल	१४२

४. वार्षिक परीक्षा २००३–२००४ का परिणाम :–

क्र.सं.	कक्षा	प्रतिशत (%)
१.	प्राक्शास्त्री	८६.३६
२.	प्राक्शास्त्री-II	७६.३२
३.	शास्त्री-I	६१.५३
४.	शास्त्री-II	४२.१०
५.	शास्त्री-III	१००
६.	ज्योतिषाचार्य-I	५०
७.	साहित्याचार्य-I	६६.६६
८.	व्याकरणाचार्य-I	१००
९.	ज्योतिषाचार्य-II	७१.४२
१०.	साहित्याचार्य-II	१००
११.	व्याकरणाचार्य-II	१००
१२.	शिक्षाशास्त्री	९६.८०

५. छात्रावास सुविधा प्राप्त छात्रों की संख्या : ६५

६. वर्ष २००३–२००४ में महिला छात्रों की प्रवेश संख्या : १८

संकाय सदस्यों का विवरण

	नाम	पद	योग्यता	विशिष्टता
१.	डा. आजाद मिश्र	ओ.एस.डी.	आचार्य (व्याकरण) एम.ए. (संस्कृत), पी–एच.डी. (भाषाविज्ञान)	व्याकरण
२.	डा. पी.जी. श्रीनिवास	रीडर, व्याकरण	एम.ए. संस्कृत	व्याकरण
३.	डा. वी.एन. चौधरी	रीडर (प्रशिक्षण)	आचार्य, एम.एड., पी–एच.डी	शिक्षा
४.	डा. सुरेन्द्र पाठक	रीडर, व्याकरण	व्याकरणाचार्य, पी–एच.डी	व्याकरण
५.	डा. (श्रीमती) पी.डी. चौधरी	रीडर, प्रशिक्षण	एम.ए., एम.एड., पी–एच.डी	शिक्षा

६.	डा. एल.एन. पाण्डेय	रीडर, प्रशिक्षण	व्याकरणाचार्य एम.एड., पी–एच.डी.	व्याकरण
७.	डा. देवीप्रसाद द्विवेदी	लेक्चरर, प्रशिक्षण	एम.ए., एम.एड., पी–एच.डी.	शिक्षा
८.	डा. के.के. शिने	लेक्चरर, प्रशिक्षण	एम.ए., पी–एच.डी.	शिक्षा

२. **अंशकालिक शिक्षक :**

१.	डा. श्री श्याम देव मिश्र लेक्चरर, पी.टी. ज्योतिष	एम.ए. (आचार्य), फलित ज्योतिषाचार्य पी–एच.डी. नेट	ज्योतिष
२.	डा. अवधेश कुमार पाण्डेय लेक्चरर, पी.टी. साहित्य	साहित्याचार्य	साहित्य
३.	डा. योगेश्वर शुक्ल लेक्चरर, पी.टी. साहित्य	एम.ए., एम.फिल्	साहित्य
४.	श्री शत्रुघ्न त्रिपाठी लेक्चरर, पी.टी. ज्योतिष	ज्योतिषाचार्य	ज्योतिष
५.	श्री हरिनारायणधर द्विवेदी लेक्चरर, पी.टी. ज्योतिष	नेट, पी–एच.डी.	
६.	श्री रङ्गनाथाचार्य लेक्चरर, पी.टी. व्याकरण	व्याकरणाचार्य	व्याकरण
७.	श्री एम.पी. शर्मा लेक्चरर, पी.टी. हिन्दी	एम.ए. हिन्दी	हिन्दी
८.	श्री अक्षय भारद्वाज लेक्चरर, पी.टी. अंग्रेजी	एम.ए. अंग्रेजी	अंग्रेजी
९.	श्रीमती सीमा सेनगर लेक्चरर, पी.टी. राजनीतिशास्त्र	एम.ए. राजनीतिशास्त्र	राजनीतिशास्त्र
१०.	श्रीमती सुनीता तिवारी प्रशिक्षक, पी.टी. कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	—
११.	श्रीमती माधवी सिंह लेक्चरर, पी.टी. (प्रशि.)	एम.ए., एम.एड.	शिक्षा
१२.	श्री. वी. सुब्रह्मण्यम लेक्चरर, पी.टी. (प्रशि.)	एम.ए., एम.एड.	शिक्षा

सेमिनारों/सम्मेलनों का विवरण जिनमें शिक्षकों/छात्रों ने भाग लिया

क्रमांक	तारीख	नाम	सेमिनार/सम्मेलन
१.	१.४.०४–३.४.०४	डा. आज़ाद मिश्र, ओ.एस.डी.	उज्जैन कालिदास अकादमी
२.	२४.४.०४	डा. आज़ाद मिश्र, ओ.एस.डी.	सिंहस्थ पर्व, उज्जैन
३.	१.५.०४–३.५.०४	डा. आज़ाद मिश्र, ओ.एस.डी.	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
४.	१.५.०४–३.५.०४	डा. एल.एन. पाण्डेय, रीडर	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
५.	१.५.०४–३.५.०४	डा. वी.एन. चौधरी, रीडर	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
६.	१.५.०४–३.५.०४	डा. पी.डी. चौधरी, रीडर	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
७.	१.५.०४–३.५.०४	डा. श्यामदेव मिश्र	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
८.	१.५.०४–३.५.०४	डा. वी. सुब्रह्मण्यम	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन, उज्जैन
९.	३.१२.०४	डा. आज़ाद मिश्र	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सम्बोधन, तिरुपति
१०.	२५.५.०४–१४.६.०४	डा. श्यामदेव मिश्र (११ छात्रों सहित)	संस्कृत नाटक शिविर, उज्जैन

वार्षिक समारोह

तारीख : २२.२.२००४

सम्माननीय अतिथि

१. डा. विद्या निवास मिश्र, एम.पी. राज्य सभा–मुख्यअतिथि

२. श्रीमती अल्का जैन, राज्य–मन्त्री उच्च शिक्षा, म.प्र. सरकार

३. श्री सुमीत बोस, स्कूल शिक्षा सचिव, म.प्र. सरकार

४. प्रो. राम प्रसाद, कुलपति बरकतुल्ला विश्वविद्यालय

संस्कृत दिवस समरोह

दिनांक : ११.८.०३ से १८.८.०३

सम्माननीय अतिथि

१. प्रो. एच.ए. वच्छानी, कुलपति बरकतुल्ला विश्वविद्यालय

२. प्रो. विन्द प्रसाद मिश्र, विभागाध्यक्ष लखनऊ विश्वविद्यालय

३. पं. मूंगा राम शास्त्री

४. डा. प्रभुदयाल मिश्र

५. श्री रामकृष्ण सर्राफ

बी.एड. छात्रों हेतु स्काऊट गाईड प्रशिक्षण

दिनांक : २०.२.०४ से २९.२.०४

११.१० राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
के.जे. सोमया परिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)

के.जे. सोमया ट्रस्ट, विद्या विहार, मुम्बई ने अपने परिसर में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापित करने का प्रस्ताव किया और साथ में एक एकड़ भूमि विद्यापीठ भवन के लिए उपलब्ध करायी। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा इसका निरीक्षण किया गया और अनुशंसा की गयी कि मुम्बई विद्यापीठ स्थापित किया जाय। मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा इस प्रस्ताव को ३१.०३.२००२ को स्वीकृत किया गया। ट्रस्ट ने जब तक आवंटित भूमि पर भवन नहीं बन जाता तब तक अपने भवनों में चलाये जाने की स्वीकृति दी। संस्थान ने जमीन का अधिग्रहण कर लिया है। तत्कालीन माननीय मानव संसाधन मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी जी ने परिसर का उद्घाटन दिनांक १६.०५.२००२ को किया। डा. प्रकाश चन्द्र प्रवाचक को वहां विशेष अधिकारी नियुक्त किया गया है।

वर्ष २००३–२००४ के दौरान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के कई पाठ्यक्रम इस परिसर में आरम्भ किए गए। यह समाचार–पत्रों में विज्ञापन, कर–पत्र तथा हैण्ड–बिलों के माध्यम से हुआ। इससे १७ छात्रों ने निम्नलिखित प्रकार से दाखिला प्राप्त किया :–

१.	प्राक्शास्त्री-I	व्याकरण	०१
		साहित्य	०४
		कुल	**०५**
२.	शास्त्री-I	साहित्य	०४
३.	आचार्य-I	साहित्य	०७
		ज्योतिष	०१
		कुल	**०८**

इनमें से १० छात्र परीक्षा में बैठे और सात छात्र अपनी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए और तीन छात्रों को अगली कक्षाओं में चढ़ा दिया गया है। परिसर में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई और ४५ छात्रों को दो समूहों में भाषित संस्कृत हेतु मार्गदर्शन व प्रशिक्षण प्रदान किया गया था।

आचार्य कक्षा के तीन छात्रों ने दिसम्बर २००३ में जयपुर में आयोजित सांख्य योग, मीमांसा और साहित्य शलाका प्रतियोगिता सम्बन्धी अखिल भारतीय वक्तृता प्रतियोगिता में सहभागिता की। उनमें से एक छात्रा सुश्री वरदा, आचार्य प्रथम वर्ष साहित्य ने साहित्य शलाका प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार जीता जिसमें एक पदक, प्रमाण–पत्र तथा १०००/– रुपए का नकद पुरस्कार शामिल थे। यह इस परिसर की रीडर श्रीमती एस. राधा के पर्यवेक्षण में हुआ।

संस्कृत भाषा के प्रचार हेतु के.जे. सोमया सुरभारती द्वारा आयोजित बैठक में छात्रों ने भाग ग्रहण किया।

परिसर में संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षकों और छात्रों द्वारा वाग्वर्धिनी परिषद् का संचालन भी किया गया था।

उस सत्र में दो नियमित शिक्षण स्टाफ के सदस्य उपलब्ध रहे। उनमें से एक साहित्य में और दूसरा व्याकरण में रीडर के पद पर था। उसके अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों के लिए पाँच अंशकालिक शिक्षक नियुक्त किए गए थे :–

१. साहित्य
२. ज्योतिष
३. हिन्दी
४. अंग्रेजी
५. राजनीतिशास्त्र

१२. वर्ष २००३-०४ की प्रमुख घटनाएँ

१२.१ संस्कृत सप्ताहोत्सव (९-१४ अगस्त २००४)

'संस्कृत सप्ताहोत्सव' ९ अगस्त से १४ अगस्त २००३ तक सप्ताह भर मनाया गया। इस अवधि में मुख्यालय तथा अंगीभूत परिसरो में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस सप्ताह के दौरान संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन मानव संसाधान विकास मन्त्रालय, राष्ट्रिय संस्कृत तथा श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वाधान में दिनांक १२ अगस्त, २००३ को राष्ट्रिय संग्रहालय जनपथ, नई दिल्ली में किया गया। भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा केन्द्रीय संस्कृत परिषद् के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री रङ्गनाथ मिश्र मुख्य अतिथि थे। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली के निदेशक श्री वीर राघवन ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी के भूतपूर्व कुलपति प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री सम्माननीय अतिथि थे और श्रीमती कुमुद बंसल, अतिरिक्त शिक्षा सचिव, मा. सं.वि. मन्त्रालय इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित थीं। प्रोफेसर वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ में साहित्य के प्रोफेसर रमेश चतुर्वेदी ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्कृत दिवस समारोह पर न्यायमूर्ति श्री रङ्गनाथ मिश्र, श्री जे.वीर राघवन, प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री, प्रोफेसर कुटम्ब शास्त्री, प्रोफेसर रमेश चतुर्वेदी और श्रीमती कुमुद बंसल।

इस सप्ताह में संस्थान मुख्यालय में १३ व १४ अगस्त २००३ को विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके विषय थे :-

१. इक्कीसवीं शताब्दी में संस्कृत की प्रासंगिकता

२. इक्कीसवीं शताब्दी में संस्कृत के विकास हेतु कार्य-योजना

निम्नलिखित विद्वानों ने अपने पेपर प्रस्तुत किए:-

कलातपस्वी श्री जी.वी. अय्यर, फिल्म निर्माता व निर्देशक बेंगलूर, डॉ. शान्ति लाल सोमैया, अध्यक्ष के.जे. सोमैया ट्रस्ट, मुम्बई, डॉ. एन.जी. डोंगरे, भूतपूर्व निदेशक, शाह इण्डस्ट्रियल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, वाराणसी, श्री श्यामजी उपाध्याय, वाराणसी, श्री एन.आर. कुमार, प्रबन्धन परामर्शदाता, चेन्नई, प्रो. एम.डी. श्रीनिवास, सेंटर फार पॉलिसी स्टडीज,चेन्नई, डॉ. पी. रामानुजन, सी-डेक, बेंगलूर, श्री विनीत चैतन्य, एल.टी.आर.सी., आइ.आइ.आइ.टी., हैदराबाद, डॉ. शक्तिधर शर्मा, हि.प्र., श्री एन.आर. पत्तर किने, सचिव, संस्कृत भाषा प्रचारिणी सभा, नागपुर, श्री के.एन. देशमुख, अध्यक्ष, संस्कृत संवादनम् मण्डल, नांदेड, श्री आर.रामचन्द्रन नायर, आइ.ए.एस., सेवा-निवृत्त मुख्य सचिव, तिरुवनन्तपुरम्, डॉ. साधु सरन सिन्हा, परामर्शी रसायन अभियन्ता, डोम्बिवली (पू.), श्री आर.वी.एस.एस. अवधानुलु, उप निदेशक, कम्प्यूटर संकाय, निजाम इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स, हैदराबाद, प्रो. वागीश शुक्ला, आइ.आइ.टी., दिल्ली, प्रो. कपिल कपूर, प्रोफेसर अंग्रेजी व तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, ज.ने.वि. नई दिल्ली, डॉ. शशी प्रभा कुमार, रीडर, सेन्टर फार संस्कृत स्टडीज़, ज.ने.वि., नई दिल्ली और डॉ. शशी तिवारी, रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री वेद प्रताप वैदिक, पत्रकार, दिल्ली।

संस्कृत सप्ताहोत्सव का विदाई समारोह मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली तथा महर्षि सन्दीपनी राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वाधाान में 'संस्कृत मित्र' तथा वेदाङ्ग विद्वत् पुरस्कार समारोह सहित राष्ट्रिय संग्रहालय, जनपथ, नई दिल्ली में १४ अगस्त, २००३ को आयोजित किया गया। भारत के विभिन्न भागों के निवासी तथा संस्कृत जगत् से भिन्न २५ सुविख्यात व्यक्तियों को जिन्होंने संस्कृत के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, मानव संसाधन विकास मन्त्रलय के माननीय मन्त्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी द्वारा सम्मानित किया गया। माननीय मन्त्री द्वारा पुरस्कार पाने वालों को रु. १०,०००/- के ड्राफ्ट, एक शाल व एक मोमेन्टो द्वारा सम्मानित किया गया। न्याय मूर्ति श्री रङ्गनाथ मिश्र ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर शिक्षा सचिव, मा. सं.वि.मन्त्री, भारत सरकार, माननीय श्री एस.के. त्रिपाठी माननीय अतिथि थे। संस्कृत मित्र पुरस्कार पाने वाले श्री जी. वी. अय्यर, फिल्म-निर्माता व निर्देशक, बेंगलूर, श्री एम.के. कॉ, भूतपूर्व शिक्षा सचिव, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ. किरीट जोशी, अध्यक्ष आइ.सी.पी.आर., नई दिल्ली, श्री सैय्यद नकवी, नई दिल्ली, डॉ. हरि गौतम, भूतपूर्व अध्यक्ष, यू. जी.सी, नई दिल्ली, श्री राजीव सांगल, आइ.आइ.आइ.टी., हैदराबाद, श्री आर.वी.एस.एस. अवधानुलु, उपनिदेशक, निजाम

इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्स, हैदराबाद, श्री एम.एम. अलेक्स, चेन्नई, डॉ. कपिल कपूर, प्रो. अंग्रेजी व तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, ज.ने.वि., नई दिल्ली, श्री एन.आर. कुमार, प्रबन्धन परामर्शी, चेन्नई, श्री के.एन. देशमुख, नान्देड, महाराष्ट्र, श्री एन.जी. डोंगरे भूतपूर्व निदेशक, शाह इन्डस्ट्रियल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, वाराणसी, श्री एन.आर. पत्तर किने, नागपुर, श्री आर. रामचन्द्रन नायर, आइ.ए.एस. सेवा-निवृत्त मुख्य सचिव, तिरुवनन्तपुरम्, डॉ. पी. रामानुजन, सी-डेक, बेंगलूर, डॉ. शान्तिलाल सोमैया, उपाध्यक्ष, के.जे. सोमैया ट्रस्ट, मुम्बई, डॉ. साधु सरन सिन्हा, परामर्शी रसायन अभियन्ता, डोम्बिवली (पू.), महाराष्ट्र, प्रो. सुरेश्वर शर्मा, भूतपूर्व कुलपति, जबलपुर, श्री सुन्दर राजन, आइ.ए.एस, भुवनेश्वर, डॉ. शक्तिधर शर्मा, हिमाचल प्रदेश, श्री एम.डी. श्रीनिवास, सेन्टर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई, श्री श्याम जी उपाध्याय, एडवोकेट, वाराणसी, श्री ए.आर. वासुदेव मूर्ति, बेंगलूर, प्रो. विनीत चैतन्य, एल.आर.टी.सी., आइ.आइ.आइ.टी., हैदराबाद हैं।

माननीय मा.सं.वि. मन्त्री, कलातपस्वी श्री जी.वी. अय्यर, फिल्म-निर्माता व निर्देशक, बेंगलूर को संस्कृत मित्र पुरस्कार प्रदान करते हुए

इस अवसर पर माननीय मा.सं.वि. मन्त्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने श्रीमती नागरत्ना हेगड़े के 'उत्तिष्ठत जाग्रत' तथा श्री टी.एन.धर के 'दि पोर्ट्रेट ऑफ इण्डियन कल्चर' नामक ग्रन्थों का विमोचन भी किया।

१२.२ वसन्तोत्सव (३-४ मार्च २००४)

वसन्तोत्सव के अवसर पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अपने परिसरों की नाटक प्रतियोगिता का आयोजन आन्ध्रा भवन, नई दिल्ली में ३ व ४ मार्च २००४ को किया। समारोह का उद्घाटन डॉ. आर.ए.पी. राव, उप महा निर्देशक, प्रसार भारती, नई दिल्ली द्वारा किया गया। प्रो. के.डी. त्रिपाठी, निदेशक, कालिदास अकादमी, उज्जैन तथा श्री श्री ज्ञानानन्द सरस्वती जी इस समारोह में सम्माननीय अतिथि थे। डॉ. आर.के. शुक्ला, प्रिंसिपल, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जयपुर परिसर ने उद्घाटन समारोह में अतिथियों का स्वागत किया। विश्वविद्यालय के विभिन्न परिसरों के छात्रों द्वारा आठ नाटकों का मंचन किया गया।

निम्नलिखित नाटकों का मंचन किया गया :-

१.	भगवदज्जुकीयम्	गुरुवायूर परिसर –	प्रथम
२.	सभिकद्यूतकरम्	भोपाल परिसर –	द्वितीय
३.	जागरूको भव	लखनऊ परिसर –	तृतीय
४.	कर्णभारम्	श्रृंगेरी परिसर	
५.	संस्कृतोद्गारम्	जम्मू परिसर	
६.	मुद्राराक्षसम्	गरली परिसर	
७.	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	जयपुर परिसर	
८.	मदनदहनम्	पुरी परिसर	

प्रो. के.डी. त्रिपाठी, कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा तीन सर्वश्रेष्ठ दलों और सर्वोत्तम अभिनेता, सर्वोत्तम अभिनेत्री को पुरस्कार प्रदान किए गए। डॉ. एस.आर. लीला, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, एन.के.आर.वी. कॉलेज, बेंगलूर और डॉ. बलदेवानन्द सागर, संस्कृत विद्वान् एवं आल इण्डिया रेडियो तथा दूरदर्शन के सुविख्यात संस्कृत समाचार वाचक इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक थे।

प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने 'नाट्य प्रतियोगिता' के महत्त्व वा व्याख्यान दिया। श्री सी.एस.कन्याल, उप निदेशक (वित्त) ने विदाई समारोह पर अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

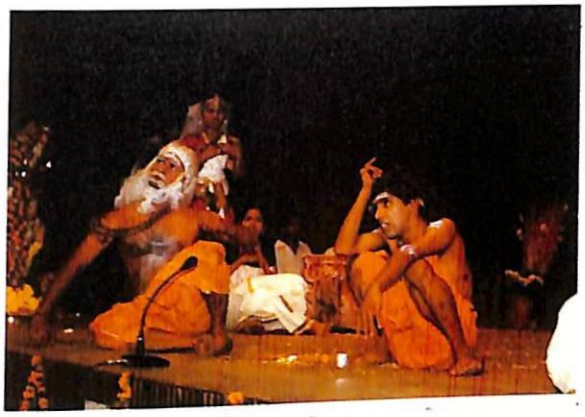

भगवदज्जुकीयम्

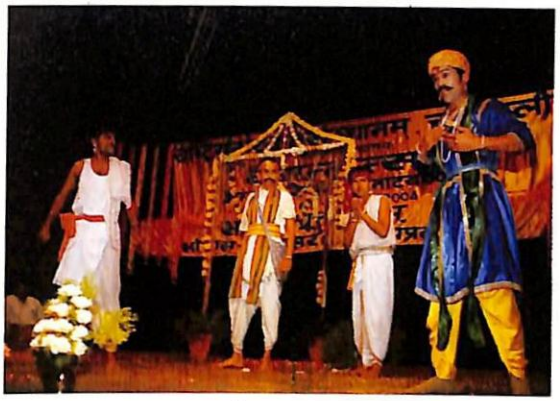

सभिकद्यूतकरम्

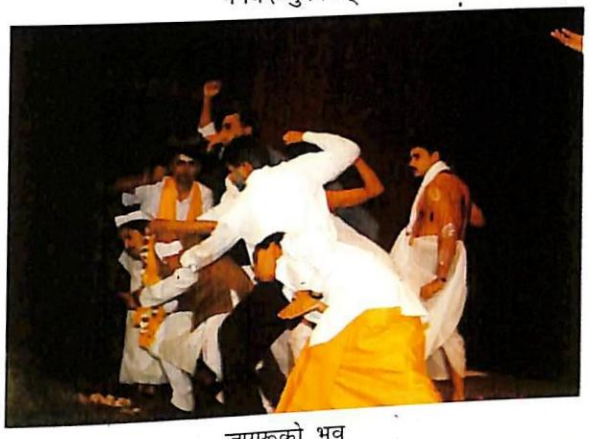

जागरूको भव

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

मुद्राराक्षसम्

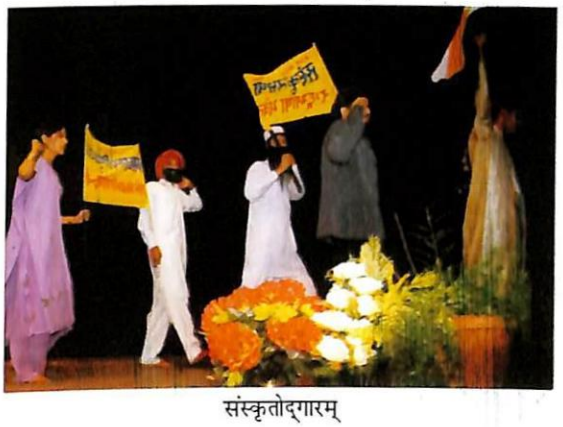

संस्कृतोद्गारम्

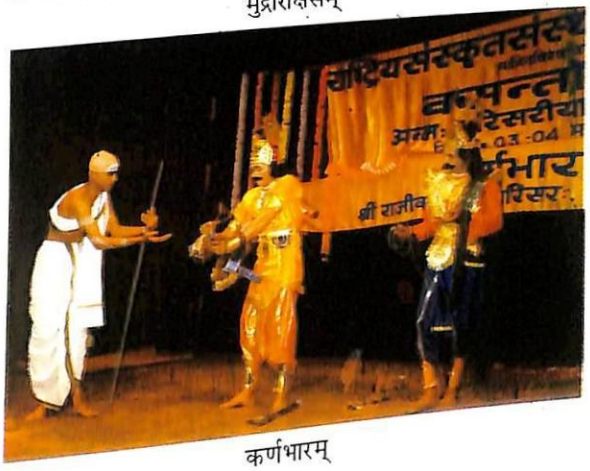

कर्णभारम्

मदनदहनम्

बायें से-वसन्तोत्सव के उद्घाटन समारोह में स्वामी श्री श्री ज्ञानानन्द सरस्वती, डॉ. आर.ए.पी. राव, प्रो. के.डी. त्रिपाठी, प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री और डॉ. आर.के. शुक्ला.

१२.३ अखिल भारतीय वाक् स्पर्धा (२७-२९ दिसम्बर, २००३)

वर्ष २००३-२००४ हेतु अखिल भारतीय संस्कृत वाक् स्पर्धा का आयोजन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर, जयपुर (राजस्थान) में २७ से २९ दिसम्बर, २००३ तक किया गया। देश के १६ राज्यों से १४६ छात्रों ने शिक्षकों सहित समस्या-पूर्ति, श्लोकान्त्याक्षरी तथा न्याय, व्याकरण एवं काव्य में शलाका परीक्षा के अतिरिक्त आठ शास्त्रों से सम्बद्ध प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में श्री घनश्याम तिवारी, शिक्षा-मन्त्री, राजस्थान सरकार मुख्य अतिथि थे। संस्कृत अध्ययन की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष प्रो. राम करण शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित पं. गङ्गाधर द्विवेदी उद्घाटन समारोह में माननीय अतिथि थे। डॉ. सत्य देव मिश्रा, उपकुलपति, राजस्थान संस्कृत विद्यालय, जयपुर इस समारोह में मुख्य वक्ता थे।

डॉ. ललित किशोर चतुर्वेदी, भूतपूर्व राज्य उच्चतर शिक्षा, राजस्थान सरकार विदाई समारोह में मुख्य अतिथि थे। पं. गिरिराज शर्मा, (डाबा भाई) प्रबन्ध सम्पादक, भारती पत्रिका ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. राम करण शर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय संस्था इसमें माननीय अतिथि थे। श्री एन. गोपालस्वामी, गृह सचिव, भारत सरकार इस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। डॉ. आर.के. शुक्ला, प्रिंसिपल, जयपुर परिसर ने अतिथियों को धन्यवाद दिया। प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने दोनों अवसरों पर अतिथियों का स्वागत किया।

इस प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार तथा पदक (स्वर्ण, रजत, कांस्य) प्रदान किए गए। विश्वविद्यालय के विभिन्न परिसरों के छात्रों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

बायें से :- डॉ. आर.के. शुक्ला, श्री ललित किशोर चतुर्वेदी, श्री एन. गोपालस्वामी, पं. गिरिराज शर्मा शास्त्री, प्रो. राम करण शर्मा, प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री-विदाई समारोह में।

१२.४ आदि शङ्कर व्याख्यानमाला-श्री आद्यशङ्कर आविर्भाव पञ्चविंशति शती महोत्सव (७.५.२००३) के समय आयोजित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने 'श्री आद्यशङ्कर आविर्भाव पञ्चविंशति शती महोत्सव समिति' के सहयोग से 'आदि शङ्कर व्याख्यानमाला' शीर्षक के अन्तर्गत दिनांक ७ मई, २००३ को राजेन्द्रा भवन, नई दिल्ली में संगोष्ठी का आयोजन किया। स्वामी श्री श्री ज्ञानानन्द सरस्वती ने समारोह की अध्यक्षता की। न्यायमूर्ति श्री वेङ्कटचलैय्या, भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश मुख्य अतिथि थे। न्यायमूर्ति श्री शङ्कर नाथ कपूर तथा श्री राम नरेश त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

निम्नलिखित विद्वानों ने अपने पेपर प्रस्तुत किए :-

न्यायमूर्ति श्री वेङ्कटचलैय्या, भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश, डॉ. आइ. पाण्डुरंग राव, भूतपूर्व अध्यक्ष, यू.पी. एस.सी., प्रो. कपिल कपूर, अंग्रेजी प्रोफेसर, ज.ने.वि., प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, भूतपूर्व कुलपति, एल.बी.एस.आर.एस.वी., नई दिल्ली, प्रो. रमेश चतुर्वेदी, प्रोफेसर (साहित्य) एल.बी.एस.आर.एस.वी., प्रो. वासुदेव घुशे, प्रोफेसर एल.बी.एस.आर.एस. वी., डॉ. कमला पाण्डेय, वाराणसी प्रो., चन्द्रकान्त दुवे, प्रोफेसर एल.बी.एस.आर.एस.वी., प्रो. वागीश शुक्ला, प्रोफेसर आइ.आइ.टी., दिल्ली, प्रो. एस.आर.भट्ट, प्रोफेसर दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. शशी प्रभा कुमार, रीडर,

ज.ने.वि., डॉ. शशी तिवारी, रीडर, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. वेदवती वैदिक, रीडर, अरविन्दो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री श्याम दुबे, डॉ. ललित कुप्पुस्वामी, रीडर, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. सुषमा कुलश्रेष्ठ, रीडर, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. श्रद्धानन्द पाठक, रीडर, एल.बी.एस.आर. एस.वी, डॉ. भास्कर मिश्रा, एल.बी.एस.आर.एस.वी, नई दिल्ली, डॉ. के. अनन्त, एल.बी.एस.आर.एस.वी., नई दिल्ली, डॉ. मधुसूदन मिश्रा, सेवा-निवृत्त उप निदेशक (ए.सी.डी.), आर.एसके.एस., डॉ. एल.के. त्रिपाठी, रीडर, आर.एसके. एस., डॉ. वाइ.एस. रमेश, राष्ट्रिय संयोजक, एन.सी.ई.आर.टी., डॉ. प्रकाश पाण्डेय, स.नि (शो.व.प्र.), आर.एसके.एस. तथा डॉ. एस.के. सेनापति, राष्ट्रिय संयोजक, एन.सी.ई.आर.टी.।

प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री ने आदि शङ्कराचार्य पर व्याख्यान दिया तथा विद्वानों और अतिथियों को धान्यवाद ज्ञापन किया।

१२.५ प्रथम वी.सी.डी.-संस्कृत भाषा शिक्षणम् का विमोचन (२६.३.२००४)

संस्थान ने पिछले कुछ महीनों में इग्नू के भाषा मन्दाकिनी चैनल पर संस्कृत भाषा सीखने सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित किए। संस्कृत भाषा शिक्षणम् के पहले एलबम में ४० पाठों वाले २० सी.डी. हैं। इसका विमोचन श्री एस.के. त्रिपाठी, शिक्षा सचिव, मा.सं.वि. मन्त्रालय द्वारा संस्थान मुख्यालय में दिनांक २६.३.२००४ को किया गया। प्रो. सुरेश चन्द्र पाण्डेय, राष्ट्रिय फेलो, आइ.आइ.ए.एस., शिमला तथा श्रीमती बेला बैनर्जी, जे.एस. (भाषा), मा.सं.वि. मन्त्रालय तथा प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री इस अवसर पर उपस्थित थे।

शिक्षा सचिव श्री एस.के. त्रिपाठी वी.सी.डी. एलबम का विमोचन करते हुए।

१२.६ संस्कृत नेट-भाषा मन्दाकिनी (५.९.२००३)

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के विशेष प्रयत्नों के फलस्वरूप भाषा मन्दाकिनी चैनल के माध्यम से भारतीय भाषाओं के शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण का निर्णय किया गया। इस चैनल का उद्घाटन माननीय मानव संसाधन विकास मन्त्री द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर ५.९.२००३ को किया गया। इस चैनल की स्थापना संस्कृत नेट पर संस्कृत के शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान तथा इन्दिरा गान्धी मुक्त विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयासों से की गई। फिलहाल यह चैनल प्रतिदिन दो घण्टे तक संस्कृत कार्यक्रम प्रसारित करता रहा है। भाषा मन्दाकिनी चैनल एक स्वतन्त्र चैनल होगा और अन्य भाषाओं के कार्यक्रम आरम्भ हो जाने पर यह प्रतिदिन २४ घण्टे कार्य करेगा। वर्तमान में ज्ञान भारती चैनल-१ (जी डी-१) प्रतिदिन प्रातः ६.३० बजे से ७.०० बजे तक और ७.१५ बजे से ७.४५ बजे तक तथा अपराह्न १२.०० बजे से १.०० बजे तक संस्कृत कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है।

१२.७ विश्व संस्कृत सम्मेलन (१४-१८ जुलाई २००३)

१२वें विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन १४ से १८ जुलाई, २००३ तक हेलसिंकी, फिनलैंड में किया गया। मानव संसाधन विकास मन्त्रलय से अनुदान पाकर भारत से १४ विद्वानों ने सम्मेलन में भाग लिया। भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु दो वरिष्ठ विद्वान् प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान तथा प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, निदेशक, कालिदास अकादमी इस सम्मेलन के विशिष्ट प्रतिनिधि थे। आइ.ए.एस.एस. अध्यक्ष ने १२वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में भाग लेने हेतु संस्कृत विद्वानों को आर्थिक अनुदान देने में भारत सरकार की पहल की सराहना की।

१२.८ दूरदर्शन पर संस्कृत कार्यक्रम (२१.३.२००४)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने विभिन्न अभिकरणों के माध्यम से संस्कृत कार्यक्रम तैयार किए हैं। इनका प्रसारण दूरदर्शन चैनल के डी.डी. भारती तथा डी.डी. इण्डिया के माध्यम से २१.३.२००४ से सप्ताह में तीन बार किया जा रहा है।

१२.९ हिन्दी पखवाड़ा (१५.१.२००४)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन १४ से ३० सितम्बर, २००३ तक किया गया। संस्थान के स्टाफ सदस्यों ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण किया। संस्कृत अध्ययन की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अध्यक्ष तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संस्थापक निदेशक प्रो. आर.के. शर्मा ने १५.१.०३ को पुरस्कार वितरित किए। प्रो. शर्मा ने व्याख्यान दिया तथा संस्थान के स्टाफ को आशिष दी।

संलग्नक–क

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रबन्धन परिषद् के सदस्यों की सूची

१.	प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	अध्यक्ष
२.	श्रीमती बेला बैनर्जी संयुक्त सचिव (भाषा) मानव संसाधन विकास मन्त्रालय माध्यमिक व उच्चतर शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–११०००१	सदस्य
३.	श्री हुलास सिंह निदेशक (वित्त) (वित्त सलाहकार का मनोनीत) मानव संसाधन विकास मन्त्रालय माध्यमिक व उच्चतर शिक्षा विभाग शास्त्री भवन, नई दिल्ली–११०००१	सदस्य
४.	प्रो. डी. प्रहलादाचार कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति (आं.प्र.) – ५१७५०७	सदस्य
५.	प्रो. सरोज भाटे भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना–४११००४	सदस्य
६.	प्रो. सीतानाथ गोस्वामी ६३/१ ए, सेलिमपुर लेन, कोलकाता–७०००३१	सदस्य
७.	श्री सतीश चन्द्र किलावत रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–३०२०१८	सदस्य
८.	प्रो. एस.सी. पाण्डेय नेशनल फेल्लर, शिमला (हि.प्र.)	सदस्य

९.	प्रो. ए.सी. सारंगी कुलपति श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (उड़ीसा)	सदस्य
१०.	डा. मिनती रथ लेक्चरर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान श्री सदाशिव परिसर, पुरी	सदस्य
११.	श्री सी.एस. कनियाल उपनिदेशक (प्रशासन), राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	सदस्य–सचिव

संलग्नक–ख

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

वित्त समिति के सदस्यों की सूची

१.	प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली	मेम्बर
२.	श्रीमती बेला बैनर्जी जे.एस. (एल.) एम./ओ. एच.आर.डी शास्त्री भवन नई दिल्ली	मेम्बर
३.	श्री हुलास सिंह डायरेक्टर (फाइनेंस) एम./ओ. एच.आर.डी. (नोमिनी ऑफ एफ.ए.) शास्त्री भवन नई दिल्ली	मेम्बर
४.	प्रो. सत्यव्रत शास्त्री नई दिल्ली	मेम्बर
५.	डा. (मिसेज) निलोफर ए. कज्मी ज्वाइंट सेक्रेटरी युनिवर्सिटी ग्रैंट्स कमीशन (नोमिनी ऑफ यूजीसी) वेस्टर्न रेजिनल ऑफिस गणेश खिंड पूना युनिवर्सिटी कैम्पस पूणे–७	मेम्बर
६.	श्री. एस.सी. पाण्डेय नेशनल फेलो, आई.ए.एस, शिमला	मेम्बर
७.	श्री सी.एस. कनियाल डिप्टी डायरेक्टर (एडमिनिस्ट्रेशन) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली	मेम्बर–सेक्रेटरी

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(१) स्थायी रूप से सम्बद्ध संस्थाएं

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
१.	लक्ष्मी देवी सर्राफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय काली रेखा, वैद्यनाथ धाम देवधर (झारखण्ड)	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
२.	आर्यकन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली	प्रथमा पूर्व मध्यमा उत्तर मध्यमा शास्त्री
३.	श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज नई दिल्ली	प्रथमा पूर्व मध्यमा उत्तर मध्यमा प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
४.	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ पोस्ट आफिस बालूसरी जिला कालीकट (केरल)	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
५.	कोडांगलूर विद्यापीठ पैलेस रोड, पो० कोडांगलूर	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
६.	श्री शंकर संस्कृत विद्यापीठम् पो० इडाक्काडम, जिला त्रिचूर (केरल)	पूर्व मध्यमा उत्तर मध्यमा प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य
७.	मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्याभवन, के० एम० मुन्शी मार्ग मुम्बई	प्राक्शास्त्री शास्त्री आचार्य

(२) सम्बद्ध संस्थाएं

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
असम			
१.	माडर्न एस्ट्रोलोजिकल रिसर्च एसोसिएशन, द्वारा श्री एन.एन. दास, आर.एम. एस. (ऑफिस) तिनसुकिया—७८६१२५	प्रथमा—द्वितीय	(नि.) ३३९६०० (का.) ३३२५९९ ३०३९६
बिहार			
२.	जगदीश नारायण ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय लगमा, ग्राम० पो० रामभद्रपुर वा० लोहनारोड, जिला दरभंगा (बिहार) ८४७४०७	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय	
३.	देवराहा बाबा भक्त शिव शंकर संस्कृत महाविद्यालय, रामचन्द्रपुर,.अन्धैल, पो० पटैली, जिला समस्तीपुर, पिन—८४८१३२	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
४.	डा० रामजी मेहता संस्कृत महाविद्यालय मालीघाट, मुज्फ्फरपुर (बिहार) ८४२००१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथमा, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्याकरण, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, सर्वदर्शन, प्राचीन व्याकरण)	३६२१/२८८४१३
५.	लक्ष्मी देवी सर्राफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय काली रेखा, वैद्यनाथ धाम देवधर (झारखण्ड) ८१४११२	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य- प्रथम, द्वितीय	
६.	राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ कोलहन्टा पटोरी, पो० पटोरी बसंत जिला दरभंगा (बिहार) ८४६००३	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, ज्योतिष (सि०व फ०) व्याकरण) । विद्यावारिधि	(का.) ६९२४१ (नि.) २४०१७

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
७.	चन्द्रिका दास संस्कृत महाविद्यालय, पो० बराखरोनी, धौरी, भोजपुर (बिहार)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण, वेद, ज्योतिष, दर्शन)	(नि.) २३१०१
८.	सरस्वती आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वेगूसराय बिहार—८५११०१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)	०३६२/२२५०६
९.	श्री रामसुन्दर संस्कृत विश्वविद्याप्रतिष्ठान रमोल बेलान (लक्ष्मीनाथ नगर) वा० बहेरा, जिला दरभङ्गा (बिहार)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा— प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
१०.	डा० मण्डन मिश्र माध्यमिक संस्कृत विद्यालय, संजात, जिला बेगुसराय (बिहार)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
११.	अजित कुमार मेहता संस्कृत शिक्षण संस्थान, उमाकान्त नगर पो० लधोरा, जि० समस्ती पुर—८४८३०२ (बिहार)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
१२.	लक्ष्मी हरिकान्त प्राथमिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय झंझारपुर, जिला मधुबनी, बिहार—८४७४०४	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय	०६२७३/२२२१६
१३.	दीनानाथ मिथिला संस्कृत महाविद्यालय पो० कथरा—८४७४२३ जिला दरभंगा—बिहार	प्रथमा—तृतीय पूर्व मध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय	

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
१४.	जे० एन० बी० आदर्श संस्कृत महाविद्यालय पो० ऑ०, लगमा, वाया लोहना रोड, जिला दरभंगा (बिहार)—८४७४०७	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (वेद, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष और धर्मशास्त्र) विद्या वारिधि	
१५.	प्राथमिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय दयालपुर, सारण, विहार	प्रथमा—तृतीय	
दिल्ली			
१६.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली—१५	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	५४३९२४९
१७.	ब्रह्मर्षि राम प्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदाङ्ग महाविद्यालय राजघाट के पीछे, पुराना पावर हाऊस, नई दिल्ली—२	पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
१८.	श्रीराम ज्योतिष कर्मकाण्ड महाविद्यालय, (राम विद्या मन्दिर एजुकेशन सोसायटी के अंतर्गत) मंडावली, दिल्ली-११००९२	आचार्य—प्रथम, द्वितीय (कर्मकाण्ड, पौरोहित्य, ज्योतिष—फलित और सिद्धांत)	
१९.	वसंत ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यालय वसंत विहार, नयी दिल्ली-११००५७	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	६१४४०८२
२०.	रामदल संस्कृत महाविद्यालय १६१२ दरीबां कलाँ, दिल्ली—६	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
२१.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ १०२१-१०२४, गली शक्ति मन्दिर दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	३२५७६३८

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
२२.	श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज नई दिल्ली—११०००२	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	३२७७४६७
२३.	श्री महावीर विश्वविद्यापीठ ए—६, पश्चिम विहार, चौधरी बलबीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली—११००६३	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण, सर्वदर्शन) विद्यावारिधि	५६८५२२०
२४.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय एफ-४८७/३, रघुवीर नगर नई दिल्ली-११००२७	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	५११९७३८
२५.	आर्यकन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली-११००६०	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय	५७८८५१८
२६.	राम ऋषि संस्कृत महाविद्यालय करोला, दिल्ली-११००८१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
२७.	आदर्श संस्कृत विद्यापीठ हरवली, दिल्ली-११००३९	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
२८.	बाल विद्या मन्दिर रोहिणी, पूठ कलाँ दिल्ली—११००४१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	(का.) ५१८५९३८ (नि.) ५४७३६८०

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
२९.	तपोवन संस्कृत महाविद्यालय नजफगढ़ (दिचाऊँ कलाँ) नई दिल्ली-११००४३	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम	५०१६९५१
३०.	इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेदिक साईंस बी-१० धन्वन्तरी निकेतन, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
गुजरात			
३१.	श्री समर्थ संस्कृत महाविद्यालय, समर्थेश्वर महादेव एलिस ब्रिज, अहमदाबाद—६	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
३२.	श्री रघुवर रामानंद वेदांत महाविद्यालय, श्री कौशलेन्द्र मठ, पो० पलाडी, सुरखेज रोड़ अहमदाबाद-गुजरात—३८०००७	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (रामानंद वेदांत)	६६०१००१
३३.	एम. जे. पी संस्कृत विद्यालय नरुनपुर, मीलाम्बिका रोड, अहमदाबाद-१३	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय तृतीय	४७४७१२ ४७१५१५
३४.	दर्शनम संस्कृत विद्यालय सरखेज गांधी नगर, हाईवे, छरोड़ी—३८२४२१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय	
३५.	श्री शंकराचार्य अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ संस्कृत महाविद्यालय, द्वारका-३६१३३५ (गुजरात)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्याकरण)	

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
हरियाणा			
३६.	आलोक संस्कृत महाविद्यालय, महेन्द्र गढ़ (हरियाणा)—१२३०३९	पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
३७.	हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ पो० बघौला, तहसील-पलवल जिला फरीदाबाद (हरियाणा)	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)	०१२७५/५२२९६
३८.	श्री रामकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय जी. टी. रोड., मुरथल, जिला-सोनीपत हरियाणा	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
३९.	श्री रामानन्द ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, विराट नगर, पिंजौर (हरियाणा)	पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	६५१७०
४०.	श्री लज्जाराम संस्कृत महाविद्यालय पाण्डु पिण्डारा, हरियाणा	प्रथमा—प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
४१.	श्री कृष्ण प्रणामी संस्कृत महाविद्यालय, प्रणामी नगर (दादरी गेट) भिवानी, हरियाणा—१२५०२१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)	
जम्मू			
४२.	श्री गुरु गंगादेव संस्कृत महाविद्यालय, शिवकाशी, सुन्दरवनी जिला राजौरी, जम्मू	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
केरल			
४३.	भारतीय संस्कृत प्रचार सभा, पायनूर-६७०३०७	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
४४.	श्री रामकृष्ण आदर्श संस्कृत महाविद्यालय रामकृष्ण मठ, पो०-अरूणापुरम्, प्लाई जिला कोट्टायम—६८६५७४ केरल	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (अद्वैत वेदान्त)	०४८२/२१२१९३
४५.	श्री शंकर संस्कृत विद्यापीठम् पो० इडाक्काडम, वा० इजहूकेन, जिला क्वीलोन केरल	पूर्वमध्यमा— प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	
४६.	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ, पो० बालूसरी, जिला कालीकट—६७३६१२	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	६४२२५०
४७.	कोडांगलूर विद्यापीठ पैलेस रोड, पो० कोडांगलूर जिला-त्रिचूर (केरल) ६८०६६४	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय	
४८.	श्री शंकर संस्कृत महाविद्यापीठम्, नांथन कोड, देवस्वम् बोर्ड जंक्शन, त्रिवेन्द्रम—६९५००३	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय	
कर्नाटक			
४९.	अकादमी ऑफ संस्कृत रिसर्च इन्स्टीट्यूट मान्द्य जिला, मालकोटे कर्नाटक—५७१४३१	शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (वेदांत, व्याकरण) विद्यावारिधि	०८२३६/५८७४१ ५८७८१ (नि.) ५८७४२
महाराष्ट्र			
५०.	मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्याभवन, के० एम० मुन्शी मार्ग मुम्बई—४०००० ७	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	३६३१२६१ (फैक्स-३६३००५८)

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
५१.	श्री अंबाजी संस्कृत महाविद्यालय, निवेतिया रोड, मलाड (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र)—४०००९७	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	८७७३९९३ सी.एफ. ८७७५७१७
५२.	विवेकानंद संस्कृत पाठशाला विवेकानंद आश्रम, विवेकानंद नगर, पो, हिवाटा, (बी.यू.) तहसील मोहेकर, जिला बलधाना-(महाराष्ट्र) ४४३३०१	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
मणिपुर			
५३.	मणिपुर संस्कृत विद्यापीठ डी० एम० कालेज कैम्पस, इम्फाल, मणिपुर	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	(नि.) ०३८५-२२६५९२ (का.) २४१०२, २४०००५
५४.	राधा माधव संस्कृत महाविद्यालय, नाम्बूल मणिपुर—७९५१३४	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण, फ. ज्योतिष व सर्वदर्शन)	०३८५/७३५३८
मध्य प्रदेश			
५५.	आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वसंत नगर, जौरा, जिला-मुरैना (म० प्र०)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
पंजाब			
५६.	बाबा हरदित गिरि संस्कृत विद्यालय संस्कृत-प्रचारिणी अखारा सरहन्द शहर, जिला फतेहगढ़ साहिब, पंजाब	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	०१७६३/२२०८२
५७.	श्री सरस्वती संस्कृत कॉलेज खन्ना—१४१४०१ जिला—लुधियाना (पंजाब)	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	२१२५८ २६२५८

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
राजस्थान			
५८.	नवजागृति संस्कृत विद्यापीठ, गंगापुर सिटी-३२२२०१ जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
सिक्किम			
५९.	हरेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, लिंग्से दार्जिलिंग हरलोक, लिंग्से, बाया रीनक, पूर्व सिक्किम-७३७१३३	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
उत्तर-प्रदेश			
६०.	आदर्श संस्कृत विद्या परिषद् सलद महादेव जिला-पौडी गढवाल (उ० प्र०)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
६१.	रानी पद्मावती तारा योग तंत्र महाविद्यालय संस्थान, इन्द्रपुर, (शिवपुर) वाराणसी	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	
६२.	श्री वटुका नाथ संस्कृत महाविद्यालय बी-२२/१९५, द्वारिकाधीश मन्दिर, शंकुलधारा, वाराणसी-२२१०१० उत्तर प्रदेश	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)	३१४९९८
६३.	गिन्नी देवी संस्कृत विद्यापीठ, जिला गाजियाबाद—२०१२०४ मोदीनगर, उत्तर प्रदेश	प्रथमा—प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
६४.	बिल्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, बिल्वेश्वर, पो० सिलयर, केमर जिला टिहरी गढ़वाल (उ० प्र०)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
६५.	श्री महर्षि कण्व संस्कृत विद्यालय, उदयरामपुर कण्व घाटी, कोटद्वार, गढ़वाल, उ० प्र० — २४६१४९	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
६६.	श्री टीबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल रोड, बरेली-उ० प्र०—२४८००५	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
६७.	गान्धी संस्कृत महाविद्यालय, पँवरी गौहनिया, पो० जसरा, इलाहाबाद	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय	
६८.	अनन्ता देवी संस्कृत महाविद्यालय पी.ओ. कौंधियार, इलाहाबाद (उ० प्र०)	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम द्वितीय	
६९.	देववाणी संस्कृत विद्यालय पी. ओ. त्रियुगी नारायण जनपद, जिला चमोली (उ० प्र०)	पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री	
७०.	ज्वालपा देवी संस्कृत महाविद्यालय, ज्वालपा देवी मन्दिर, पो० पटी सैन पौड़ी गढ़वाल (उत्तर प्रदेश)	शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय	
पश्चिम बंगाल			
७१.	पगलानन्द संस्कृत विद्यालय दौरा पो० (कंटई) जिला-मिदनापुर पश्चिम बंगाल—७२१४०	प्रथमा—तृतीय, पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
७२.	श्री सीताराम वैदिक आदर्श संस्कृत महाविद्यालय ७/२ पी. डब्ल्यू. डी. रोड, कोलकाता-७०००३५	प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य—न्याय, व्याकरण, वेदान्त, वेद, ज्येतिष, बौद्ध दर्शन, धर्म-शास्त्र) । विद्यावारिधि	५७७-७२५० (फैक्स-०३३-५७७६२४०)

क्रम सं०	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है	दूरभाष
७३.	ठाकुर गदाधर विद्यापीठ, पो० आरामबाग (कालीपुर) जिला हुगली (पश्चिम बंगाल)	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (व्याकरण, साहित्य, नव्यन्याय)	
७४.	कालियाचक विक्रम किशोर आदर्श संस्कृत महाविद्यालय गाँव—कालियाचक पोस्ट ऑफिस हेरिया जिला—मिदनापुर (पश्चिम बंगाल)—७२१४३०	प्रथमा—तृतीय पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय शास्त्री—प्रथम, द्वितीय आचार्य—प्रथम, द्वितीय (सहित्य, धर्मशास्त्र, व्याकरण, सांख्य योग, नव्य न्याय, वेदान्त)	
७५.	मदर उषा मैमोरियल सैन्ट्रल इंस्टीट्यूशन एण्ड आगम (तंत्र) रिसर्च सैन्टर गाँव—वामनी गाँव, पोस्ट ऑफिस बेकीदंगा, जिला—उत्तर दीनाजपुर (पश्चिम बंगाल)	प्रथमा—प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्व मध्यमा—प्रथम, द्वितीय	
७६.	भारती चतुष्पाठी श्री श्रीगुरु कर्ण निकेतन, अमूल्य पारा, नवद्वीप, नादिया, (प० बंगाल) —७४१३०२	पूर्वमध्यमा—प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री—प्रथम, द्वितीय	
७७.	विवेकानन्द वेद विद्यालय, रामकृष्ण मठ, पो० ओ० वेलूर मठ जिला हावड़ा (पश्चिम बंगाल)—७११२०२	पूर्व मध्यमा—प्रथम, द्वितीय उत्तर मध्यमा—प्रथम, द्वितीय	६५४११८० (फैक्स-६५४-४३४६)

विद्यावारिधि पाठ्यक्रम के लिए संबद्ध संस्थाओं की सूची

१. पूर्णप्रज्ञा संशोधन मन्दिर
पूर्णप्रज्ञा विद्यापीठ, पूर्णप्रज्ञा नगर
कठारीगुप्पा मेन रोड, बेंगलूर-५६००२३

२. हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ,
पी०ओ० बघोला, तहसील-पलवल,
जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

३. अकेडमी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
मेलकोट-५७१४३१, (कर्नाटक)

४. कुप्पुस्वामी शास्त्री शोध संस्थान
८४, थेरु वी, का, रोड (रोयनपेट्ट हाई रोड)
मइलापुर, मद्रास-६०००००४

५. श्री महावीर विश्व-विद्यापीठ
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-११००६३

६. वेद संस्थान,
सी-२२, रजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७

७. श्री सीताराम वैदिक आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
७/२, पी. डब्ल्यू. डी. रोड, कोलकाता-७०००३६

८. सोशल हारमनी अप्लाइड रिसर्च अक्षरधाम सेन्टर
जे. रोड, सेक्टर-२०, गान्धी नगर,
अहमदाबाद-३८२०२०

९. शिव भारती शोध
जंगमवाडी मठ, जंगमवाडी,
वाराणसी-२२१००१ (यू.पी.)

१०. जे. एन. बी. आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
पी. ओ.-लगमा (आर० बी० पुर, वाया- लोहना रोड,
जिला दरभंगा (बिहार) ८४७४०७

११. राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ,
कोलहंता पटोरी, पी० ओ० पटोरी बसन्त
जिला दरभंगा-८४६००३

संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाली संघ एवं राज्य सरकारों के नामों की सूची

१.	नं० ६/१२/७१ ई एस टीटी (डी) भारत सरकार, कैबिनेट सचिवालय, कार्मिक विभाग, नयी दिल्ली	१-प्रथमा २-मध्यमा ३-शास्त्री ४. आचार्य ५. शिक्षाशास्त्री ६. विद्यावारिधि ७. वाचस्पति	= = = = = = =	मिडिल स्कूल उच्चतर माध्यमिक बी.ए. एम.ए. बी. एड पी-एच. डी. डी. लिट्.
२.	मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग नं० ७९५/७१६१(३)/७२ भोपाल, दिनांक ५.१२.१९७२			—वही—
३.	पंजाब सरकार, नं० ४७२-४६८-II ७२२६८६ दि० जनवरी, १९७१			—वही—
४.	शिक्षा निदेशक, मणिपुर ११/८/७१ एस ई, दिनांक ३० अगस्त, १९७२			—वही—
५.	शिक्षा निदेशक, दिल्ली एफ-३२/१२५/शिक्षा/७२ दिनांक २९-१-१९७२			—वही—
६.	गोआ, दमन और दीव, विशेष/स्थापना/२६६५-II दिनांक २३ अक्तूबर, १९७२			—वही—
७.	तमिलनाडु सरकार, ज्ञापन सं० ९४१२०/एच-१७२, २- शिक्षा दिनांक—२ जनवरी, १९७३ पत्र संख्या-एल. डिस ३५०३३/०४	शिक्षाशास्त्री प्रथमा मध्यमा पूर्वमध्यमा	= = = =	बी. एड. मिडिल स्कूल उच्चतर माध्यमिक मैट्रिक

८.	महाराष्ट्र सरकार-८२/दि० २४-९-८२ अनुशेष, सं०-एस. एस. एन. ३२७१/१५७४२७-ई दिनांक २३ अक्तूबर, १९७२	उत्तरमध्यमा	=	सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट प्राक्शास्त्री
९.	उत्तरप्रदेश सरकार सं० १०/२/१२१९ नियुक्ति (४) लखनऊ, दिनांक २७ अगस्त, १९७३	१ प्रथमा	=	मिडिल स्कूल (आठवीं कक्षा)
		२ पूर्वमध्यमा	=	हाई स्कूल
		३ उत्तरमध्यमा	=	इन्टरमीडिएट
		४ शास्त्री	=	बी. ए.
		५ आचार्य	=	एम. ए.
		६ शिक्षाशास्त्री	=	बी. एड.
		७ विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
		८ वाचस्पति	=	डी. लिट्
१०.	हरियाणा सरकार सं० २१८, जी शिक्षा (एस ई) ७४/१४६२० चंडीगढ़, दिनांक १३-५-७४ ज्ञापन सं.-डी ४/५०-७३-सी ओ (२) दिनांक १२-२-१९८६	१ प्रथमा	=	मिडिल—VIII
		२ मध्यमा	=	हायर सैकण्डरी या इंटरमीडिएट
		३ शास्त्री	=	बी.ए
		४ आचार्य	=	एम.ए
		५ शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड
		६ विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
		७ वाचस्पति	=	डी. लिट्
		८ शिक्षाशास्त्री	=	ओ. टी.
		(हरियाणा में संस्कृत)		

संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता देने वाले विश्वविद्यालयों के नामों की सूची

१. महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, पत्र सं० एसी/११/२२१ दिनांक ३०-६-९३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२. सागर विश्वविद्यालय, सागर, पत्र सं० सामान्य/मान्यता/९७४ दिनांक १६.६.७८ तथा दिनांक ९.४.१९७३

मध्यमा	=	इंटरमीडिएट
शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

३. विक्रम विश्वविद्यालय प्रशासन/मान्यता/७३ दिनांक १ अगस्त, १९७३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड.
विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्

४. आन्ध्र विश्वविद्यालय पत्र सं० १ (६) ३९२५/७२ दिनांक २७-९-९३

शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड

५. राजस्थान विश्वविद्यालय पत्र सं० एफ-४-१/७२ (शैक्षिक-११/११४६/ए दिनांक २५-५-७३ जयपुर

शास्त्री	=	बी.ए.

६. कालीकट विश्वविद्यालय संदर्भ सं० जी ए (डी ४) ८९९/७२ दिनांक २८-११-१९७३

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

७. श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय आर. ओ. सी. संख्या-सी. आई. ३३०१७/७३ दिनांक १२-१२-७३

शास्त्री	=	बी. ए.
आचार्य	=	एम. ए.

८. मगध विश्वविद्यालय पत्र सं० ४७६७/ ४८-२३ डी ११/बोध गया दिनांक ४-१२-७३

मध्यमा	=	हायर सैकण्डरी
शास्त्री	=	बी. ए.
आचार्य	=	एम. ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी. एड.
विद्यावारिधि	=	पी-एच-डी.

९. जम्मू विश्वविद्यालय पत्र संख्या-एफ. शैक्षिक V/१५३/७४/४/९५-९९ दिनांक १४-२-१९७४

मध्यमा	=	पूर्व- विश्वविद्यालय
शास्त्री-भाग-१	=	बी. ए. भाग—१
शास्त्री-भाग-३	=	बी. ए. अंतिम वर्ष
आचार्य	=	एम. ए. संस्कृत या साहित्याचार्य

१०. अन्नामलाई विश्वविद्यालय एल. डिस्. पी-बी २१/८३/७३ दिनांक २२-२-१९७४

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

११. बर्दवान विश्वविद्यालय आर. सी. आई/सम/१४१/३७६१७४ दिनांक २४-६-७४

मध्यमा	=	विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम
शास्त्री	=	कला-स्नातक परीक्षा (त्रिवर्षीय)
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

१२. कानपुर विश्वविद्यालय पी एस के वी/बोर्ड/४३१८/७४-७५ दिनांक २२-११-७४

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए

१३. उत्कल विश्वविद्यालय पत्र सं० ए सी- १/आर. एम./१७१/५१०४६/७५ दिनांक १-७-१९९५

शास्त्री	=	बो.ए.

(द्रष्टव्य क्रम सं० ३२ भी)

१४. पूना विश्वविद्यालय ईएलजी/सम-१०९/३९४९/दिनांक २६-४-१९७५

प्राक्शास्त्री	=	प्री-डिग्री
शास्त्री	=	बी.ए. (संस्कृत)
आचार्य	=	एम. ए. (संस्कृत)
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड. (संस्कृत)

१५. जयपुर विश्वविद्यालय पत्र सं० ई०/३०१३ दिनांक १३-५-१९७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

१६. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय पत्र सं० ए सी एम-११/६११५ दिनांक ६-६-१९७५ और ए सी एम/११/१३७/७/७६११००० दिनांक ७-८-७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

१७. गुजरात विश्वविद्यालय परीक्षा/बी. मान्यता सं० ३२४८२ दिनांक १७-९-१९७५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

१८. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पत्र संख्या-एफ. ३६/ओईन ३१/संस्कृत/२२७२१ दिनांक २३-१२-७४

प्रथमा	=	मिडिल स्कूल तथा बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों में नवीं कक्षा में प्रवेश हेतु।

१९. केरल विश्वविद्यालय पत्र सं० सी-३/७२०/७६ जिला त्रिवेन्द्रम दिनांक २२-३-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२०. विश्वभारती पत्र सं० जी-४-४३ दिनांक २३-४-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

२१. भारतीय विश्वविद्यालय संघ पत्र सं० ई वी—११९२२/७६/३२७३५ दिनांक ७-२-७६

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२२. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय पत्र सं० १२/१३/७२ एच पी यू (शैक्षिक) दिनांक १९-१२-७७

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.
विद्यावारिधि	=	पी-एच. डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

२३. दिल्ली विश्वविद्यालय पत्र सं०-१/मान्यता/डी/८४ दिनांक १४-११-८४

शास्त्री	=	(बी.ए. पासकोर्स) एम. ए. संस्कृत में प्रवेश के लिए
आचार्य	=	एम. ए. (संस्कृत)

२४. संभलपुर विश्वविद्यालय पत्र सं० ११७२७/शैक्षिक-दिनांक ४-५-७९

शास्त्री	=	बी.ए. (एम. ए. संस्कृत में प्रवेश हेतु)

२५. श्री कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय पत्र संख्या-९३५६७४ दिनांक ४-१०-७४

मध्यमा	=	मध्यमा
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य
शिक्षाशास्त्री	=	शिक्षाशास्त्री
विद्यावारिधि	=	विद्यावारिधि
वाचस्पति	=	विद्या वाचस्पति

२६. कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ पत्र सं०-मान्यता/के- १०८/शैक्षिक/१५०४ दिनांक १२-७-७९

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम. ए.

२७. गुरु नानक देव विश्ववद्यालय अमृतसर पत्र सं० सामान्य/मान्यता/३९२० दिनांक २२-४-१९८०

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

२८. मद्रास विश्वविद्यालय पत्र सं० सी आर-III/मान्यता /१९२५ दिनांक १७-३-१९८०

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.

(यदि पाठ्यक्रम में अंग्रेजी एक विषय के रूप में हो)

२९. पंजाब विश्वविद्यालय पत्र सं० एस-१६८८१ दिनांक २८-११-१९८०

प्रथमा	=	प्राज्ञ
मध्यमा	=	विशारद
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य

३०. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पत्र सं० ५१६३/८४/एस.जे. एस. बी. दिनांक १०-८-८४

प्रथमा	=	प्रथमा
पूर्वमध्यमा	=	मध्यमा
उत्तरमध्यमा	=	उपशास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	आचार्य
विद्यावारिधि	=	विद्यावारिधि
वाचस्पति	=	वाचस्पति

३१. बरहमपुर विश्वविद्यालय/भंज विहार, वरहमपुर, जिला-गंजाम उड़ीसा पत्र सं० ५१३१/शैक्षिक -११/बी यू/८४ दिनांक १६-४-८४

शास्त्री	=	बी.ए. (पास)
आचार्य	=	एम. ए. (संस्कृत)

३२. उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर (उड़ीसा) पत्र सं० १८८२६ दिनांक ५-६-८४

आचार्य	=	एम. ए. (संस्कृत)

(बी.ए.स्तर तक अंग्रेजी सहित)

३३. त्रिभुवन विश्वविद्यालय मछली टेकू काठमांडू नेपाल पत्र सं० ३७२/८४ दिनांक १९-९-८४

प्राक्शास्त्री	=	प्राक्शास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री

३४. संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी पत्र सं० जी-४५८/४०१९/७४-८५

प्राक्शास्त्री	=	प्राक्शास्त्री
शास्त्री	=	शास्त्री

३५. भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल पत्र सं० १११२/बी यू/शैक्षिक/८५ दिनांक १५-३-८५

शास्त्री	=	बी.ए.
आचार्य	=	एम.ए.
शिक्षाशास्त्री	=	बी.एड.
विद्यावारिधि	=	पी-एच.डी.
वाचस्पति	=	डी. लिट्.

३६. संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी पत्र सं० शै०-१७२२/९२ दिनांक २२-१२-९२

आचार्य	=	आचार्य
विद्यावारिधि (पी-एच.डी)	=	विद्यावारिधि (पी- एच. डी.)
वाचस्पति (डी.लिट्)	=	वाचस्पति (डी. लिट्.)

३७. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र पत्र सं०-ए सी एम/११/१३७/९२/३२४८९ दिनांक २८-१२-९२

शास्त्री	=	बी.ए. (पास) टी डी सी
(अंग्रेजी विषय के साथ)		(१० + १ + ३ योजना के अंतर्गत)
		परंतु विद्यार्थी अंग्रेजी विषय के साथ उत्तीर्ण हो।
शास्त्री	=	शास्त्री
आचार्य	=	एम. ए.

(यदि विद्यार्थी ने अंग्रेजी विषय के साथ बी.ए. उत्तीर्ण किया हो)

३८. मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार/शिक्षा नयी दिल्ली के पत्र सं. एफ-७-२/८३-संस्कृत- २ दिनांक ३१ दिसम्बर, १९९२

शिक्षा आचार्य = एम.एड.

३९. रवि शंकर विश्वविद्यालय पत्र सं० २९४७/ए के ए मान्यता/९० रायपुर दिनांक ३-८-१९९०

४०. मणिपुर विश्वविद्यालय कांचीपुर-इम्फाल नोटिस दिनांक ३ जनवरी, १९९२

शास्त्री = अंग्रेजी विषय के साथ बी.ए.

४१. अजमेर विश्वविद्यालय पत्र सं० एफ १४(१९३) शिक्षा-११/यू ओ ए/९२/३४००/३५०६ दिनांक ६ फरवरी, १९९२

शिक्षाशास्त्री = बी.एड.